www.ghoonghatkibagawat.com E-mail : ghoonghatkibagawat@gmail. Com Facebook: ghoonghatkibagawat

GKB

घूँघट की बगावत

RNI NO : UPHIN/1999/01282

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित

हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

वर्ष : 19 | अंक : 48 | गोरखपुर | 21 जून 2020 | पृष्ठ : 8 | मूल्य : 2

भारतीयों की सहनशीलता की परीक्षा ना ले चीन

भारत कोई नेपाल, भूटान, तिब्बत और ताइवान नहीं है। एक–एक शहादत का बदला लेना जानता है भारत और हमेशा से चीन को ईंट का जवाब पत्थर से दिया है। सर्वप्रथम हम किसी को छेड़ते नहीं है और अगर गलती से भी कोई हमें छेड़ दे तो

हम उसे भूलते और छोड़ते नहीं।

चीन जिस तरह से हालिया दिनों में अहंकार में मगरूर हो कर सीमा पर प्रतिरोध बढ़ा रहा है वह उसके मूर्खता का प्रतीक है।शायद वह भूल चुका है कि उसे रेजांगला में मुट्ठी भर भारतीय वीर सैनिकों ने धूल चटा दी थी। बहुत कुछ हो सकता है चीन के पास लेकिन याद कर ले एक एक भारतीय के पास वह आत्म बल और स्वाभिमान है,जो चीन के हजार लोगों के बराबर है।

हमारे धैर्य और सहनशीलता का ज्यादा परीक्षा लेने की कोशिश ना करे अन्यथा जिस दिन भारतीय लोगों का गुस्सा बाहर आ गया उस दिन चीन कहीं का नहीं रह पाएगा। आखिर चीन समझता क्या है भारत के कुछ सैनिकों को धोखे से मारकर भारतीय सेना और लोगों को धमका देगा। भारत कोई नेपाल,भूटान, तिब्बत और ताइवान नहीं है। एक–एक शहादत का बदला लेना जानता है भारत और हमेशा से चीन को ईंट का जवाब पत्थर से दिया है।. सर्वप्रथम हम किसी को छेड़ते नहीं है और अगर गलती से भी कोई हमें छेड़ दे तो हम उसे भूलते और छोड़ते नहीं।चीन हमेशा से 1962 में धोखे से लड़े गए युद्ध पर आत्ममुग्धता में रहता है पर उसे 1967 को याद रखना चाहिए,जब भारतीय सैनिकों ने 40 के बदले 400 चीनी सैनिकों को मार गिराया था।चीन को अपने पिट्ठू पाकिस्तान के बंटवारे से भी सीखना चाहिए पाकिस्तान ने भी भारत के साथ धृष्टता की थी जिसे भारत ने पहले तो माफ किया पर जब फिर भी वह नहीं संभला और समझा तो उसे दो हिस्सों में बांट दिया।उस बंटवारे की कसक में पाकिस्तान हर दिन आहें भरते हुए आज भी जी रहा है।दूसरी ओर अगर चीन को अपने धन का घमंड है तो वह अपने पास रखे।जिस रेत के पहाड़ पर उसकी अर्थव्यवस्था टिका हुआ है वह चंद महीनों में विलीन हो जाएगा, अगर भारतीय बाजार को चीनी माल के लिए बंद कर दिया जाए तो। पूरा हिंदुस्तान जानता है कि दक्षिणी हरियाणा के वीरों की खान के नाम से प्रसिद्ध अहीरवाल क्षेत्र जो अपनी पराक्रम वीरता और देशभक्ति के लिए प्रसिद्ध रहा है इसी क्षेत्र के वीर यादव नौजवानों ने 18 नवंबर 1962 को चुशूल घाटी की रेजांगला पोस्ट पर मेजर शैतान सिंह भाटी के नेतृत्व में भारत भूमि की रक्षा करते हुए अपने प्राणों को न्योछावर कर दिया था लेकिन 1 इंच आगे नहीं बढ़ने दिया था।जब रात 3रू30 बजे चुशूल घाटी यानी रेजांगला में भारतीय रणबांकुरे चीनी हमला का मुंहतोड़ जवाब देते हुए उन्हें आगे बढ़ने से रोक दिया था।यह लड़ाई शून्य से 35 डिग्री नीचे के तापमान में हमारे जवानों ने बिना बर्फ से बचने वाले ड्रेस के लड़े थे।उनके पास लड़ाई लड़ने के लिए पर्याप्त गोला–बारूद भी नहीं थे।फिर भी चीन को वीर अहीर सैनिकों ने घुटनों के बल झुकने को मजबूर कर दिया गया था। मालूम हो कि चीनी सेना आर्टिलरी सपोर्ट के साथ आगे बढ़ रही थी।इस लड़ाई को आखिरी आदमी आखिरी गोली आखरी सांस के नाम से भी याद किया जाता है।ऐसा इतिहास में दर्ज है 124 भारतीय सैनिकों ने 1700 चीनियों की लाश बिछा दी थी।यही एकमात्र इतिहास का युद्ध था जिसमें दुश्मन ने भी भारतीय सैनिकों की वीरता की तारीफ किया था।आज भी दुनिया के सैन्य अफसरों और सैनिकों को ट्रेनिंग के दौरान रेजांगला के बारे में पूरा पाठ पढ़ाया जाता है।भारत को इस युद्ध की कहानी शायद पता तक न चलता अगर मरते समय तेरहवीं बटालियन कुमायूं के अगुआ मेजर शैतान सिंह भाटी ने मानव कैप्टन रामचंद्र यादव को पूरी जानकारी देने के लिए सेना के मुख्यालय ना भेजा होता। ऐसा कहा जाता है कि 124 जवानों में 119 अहीर (यादव) थे। उस वक्त भारतीय सेना के रेसलर और नायक राम सिंह यादव राइफल की गोली समाप्त होने के बाद गोली वर्षा के बीच चीनी सैनिकों के बीच पहुंचकर उनसे भिड़ गए और वीरगति से पूर्व से कई चीनी सैनिकों का काम तमाम कर दिया था।चीनी सैनिकों ने हमारे वीर अहीर शेरों की लाशों को कम्बल से ढककर उनके सिर के साथ उनकी बन्दूक को खड़ा किया और एक कार्ड पर "बहादुर" लिख कर उनके सीने पर रख दिया और फिर रेडियो पीकिंग से खबर दी की चीन का सबसे ज्यादा नुक्सान रेजांगला में हुआ।

विश्व का सैन्य इतिहास यूं तो वीरता की कहानियों से भरा पड़ा है, परंतु रेजांगला की गौरवगाथा हर लिहाज से वीरता और शहादत की अनूठी दास्तां है।बिना किसी तैयारी के हरियाणा के अहीरवाल क्षेत्र के वीर जवानों ने 18 नवंबर 1962 को लद्दाख की दुर्गम बर्फीली चोटी पर सैन्य पराक्रम वीरता और शहादत का ऐसा इतिहास लिखा था,जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।चीन को आज भी वह हार कचोटते रहता है। वीर अहीर सैनिकों की बहादुरी दुनिया में अपनी तरह का एक अलग नजीर पेश करता है जहां मुट्ठी भर सैनिकों ने पूरी पलटन को पलट कर रख दिया था।यह भारत भूमि के वीरों के जज्बे का ही परिणाम था,कि चीन सीज फायर करने को मजबूर हो गया था।बेशक भारत को इस युद्ध में अधिकारिक रूप से जीत नसीब नहीं हुई, परंतु सामरिक दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानी जाने वाली रेजांगला पोस्ट पर भारतीय जांबाज जवानों ने हजारों चीनी सैनिकों को मौत के नींद सुला कर भारत की अस्मिता की लाज रख ली थी।इस लड़ाई में तत्कालीन 13 कुमाऊं बटालियन के कुल 124 जवान शामिल थे, जिनमें से 114 शहीद हो गये थे।शहादत वीरता और पराक्रम की गाथा लिखने वालों में अधिकांश जवान अहीरवाल क्षेत्र के थे। इस युद्ध की खास बात यह थी कि चीनी सैनिक जहां पहाड़ी क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों व बर्फीले मौसम से पूरी तरह अभ्यस्त थे, वहीं मैदानी क्षेत्रों से गये भारतीय सैनिकों के लिए परिस्थितियां पूरी तरह प्रतिकूल थी।उसी विषम परिस्थिति में 18 नवंबर को तड़के चार बजे युद्ध शुरू हो गया था।नजदीक की दूसरी पहाड़ियों पर मोर्चो संभाल रहे अन्य सैनिकों को रेजांगला पोस्ट पर चल रहे इस ऐतिहासिक युद्ध की जानकारी तक नहीं थी। लद्दाख की बर्फीली, दुर्गम व 18 हजार फुट ऊंची इस पोस्ट पर सूर्योदय से पूर्व हुए इस युद्ध में यहां के वीरों की वीरता देखकर चीनी सेना कांप उठी थी और उनके पांव उखड़ गए थे। इस युद्ध में 124 में से कंपनी के 114 जवान शहीद हो गये,तब तक उन्होंने चीन के आगे बढ़ने के मंसूबों पर पानी फिर दिया था।

पीकिंग रेडियो ने भी तब केवल रेजांगला पोस्ट पर ही चीनी सेना की शिकस्त स्वीकार की थी।रेजांगला पोस्ट पर दिखाई वीरता का सम्मान करते हुए भारत सरकार ने कंपनी कमांडर मेजर शैतान सिंह को मरणोपरांत देश के सर्वोच्च वीरता पुरस्कार पदक परमवीर चक्र से सम्मानित किया था।साथ ही इसी बटालियन के आठ अन्य जवानों को वीर चक्र, चार को सेना पदक व एक को मेंशन इन डिस्पेच से सम्मानित किया गया था।13 कुमायूं के सीओ को एवीएसएम से अलंकृत किया गया था।भारतीय सेना के इतिहास में किसी एक बटालियन के जवानों को एक साथ इतने सम्मान नहीं प्राप्त हुए हैं।

रेजांगला युद्घ में शहीद हुए सैनिकों में मेजर शैतान सिंह पीवीसी जोधपुर के भाटी राजपूत थे,जबकि नर्सिग सहायक धर्मपाल सिंह दहिया (वीर चक्र) सोनीपत के जाट परिवार से थे।वही कंपनी का सफाई कर्मचारी पंजाब का रहने वाला था,इनके अलावा शेष सभी जवान अहीर जाति के थे।इनमें से भी अधिकांश हरियाणा के रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़ व सीमा से सटे अलवर जिले के रहने वाले थे. ।कहा तो ऐसा जाता है जब उनके पास गोलियां खत्म हो गई तो जवानों ने हथियारों का इस्तेमाल लाठियों के रूप में किया और रेजांगला पोस्ट पर दुश्मन का कब्जा होने नहीं दिया।रेजांगला के वीर अहीर सैनिकों के सम्मान में आज भी वहां स्मारक बना हुआ है जहां सभी सैनिकों के नाम संगमरमर पर खुदा हुआ है।देश के लोग आज भी रेजांगला के वीर सैनिकों को गर्व के साथ याद करते हैं।भारत हमेशा से शांति और भाईचारा में विश्वास करने वाला मुल्क रहा है लेकिन जब जब किसी ने ललकारा है उसे उसी की भाषा में जवाब देते आया है और देता रहेगा।

गोपेंद्र कुमार सिन्हा गौतम

आँखों के आंसू

बेटी के ससुराल में
पिता के आने की खबर
बेसब्री तोड़ देती
बेटी की आँखे
निहारती राहों को।
देर होने पर
छलकने लगते आँसू
दहलीज पर आवाज लगाती
पिता की आवाज –बेटी।
रिश्तों ,काम काज को छोड़
पग हिरणी सी चाल बने
ऐसी निर्मल हवा
सूखा देती आँखों के आंसू
लिपट पड़ती अपने पिता से।
रोता –हँसता चेहरा
बोल उठता
पापा
इतनी देर
कैसे हो गई
समय रिश्तों के
पंख लगा उड़ने लगा
मगर यादें
वहीं रुकी रही
मानो कह रही हो
अब न आ सकूंगा
मेरी बेटी।
मगर अब भी बेटी की आँखे
निहारती राहों को ।
याद आने पर
छलकने लगते आँसू
दहलीज पर आवाज लगाती
पिता की आवाज–बेटी
अब न आ सकी।
पिता की राह निहारने के बजाय
अब आकाश के
तारों में ढूढ़ रही पिता
कहते है कि लोग मरने के बाद
बन जाते है तारे।
आंसू ढुलक पड़ते
रोज गालों पर
और सुख जाते अपने आप।
क्योकि निर्मल हवा कभी
सूखा देती थी आँखों के आंसू
जो अब है थम।

संजय वर्मा 'दृष्टि'
मनावर जिला धार (म प्र)

सूर्यग्रहण में होंगे 6 ग्रह वक्री

वर्ष 2020 का अद्भुत सूर्य ग्रहण जो 21 जून को एक खगोलीय घटना का रूप लेगा। ज्योतिष के ऐतिहासिक नजर से देखा जाए तो जो ग्रहों के ये संयोग बनने जा रहे हैं ये सदियों पूर्व बने थे। इस बार के सूर्य ग्रहण में 6 ग्रह वक्री रहेंगे । मिथुन राशि में राहू चन्द्रादित्य को कष्टप्रद कर रहा है । मंगल मीन राशि मे रहेंगे जिनका सीधा संपर्क मिथुन राशि में विराजमान ग्रहों से होगा । बुध,शुक्र, शनि ,बृहस्पति, राहु केतु छरू ग्रह वक्री रहेंगे। इस प्रकार की ग्रह चाल से यह सूर्य ग्रहण बेहद खास योग व कष्ट दायक रहने वाला है ।

- खण्डग्रास (कंकण आकृति) में सूर्य ग्रहण का दृश्य
- कर्क रेखा पर सूर्य भी रहेगा साथ में ग्रहण भी

* 6 ग्रह रहेंगे वक्री

भारतीय समय सारणी के अनुसार यह सूर्य ग्रहण 21 जून प्रातः 09:12:57 से आरम्भ हो जाएगा । कंकणाकृति भारत मे दृश्यमान होने के कारण सूतक काल का प्रभाव पूर्णतः बना रहेगा। सूर्य ग्रहण का सूतक काल ग्रहण लगने से 12 घंटे पूर्व ही प्रभावी हो जाता है, जो ग्रहण काल की समाप्ति के साथ समाप्त होता है। इस दौरान विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है। विशेषकर गर्भवती महिलाओं को विशेष सावधानी रखनी चाहिए। ग्रहण काल में पूजा स्थल के दरवाजे , कपाट बंद कर दिए जाते हैं । सूर्य ग्रहण के बाद स्नान, दान और मंत्र जाप करना विशेष फलदायी रहेगा।● षट ग्रह वक्री होने के कारण देश मे उपद्रव , आंधी तूफान, भूकम्प और महामारी के फैलाव में तेजी बनी रहेगी।

प्यार मोहब्बत

हम आपसे प्यार बेसुमार करते हैं !
इश्क में गुनाह ये हर बार करते है !
हसीन ख्यालों में सपने सँजोकर
चाँदनी रातों में तेरा दीदार करते हैं !
आँखों मे बहता अहसासों का दरिया
मन की बगिया को गुलजार करते हैं !
इश्क हमने उनसे बेहिसाब किया है
क्यूँ नहीं हम पर वो एतबार करते हैं !
हम लुटाते है जिस्मों–जान उन पर
तोड़कर दिल मेरा क्यूं तार–तार करते हैं !
बचकर हमसे कहाँ जाओगे सनम
सातों जन्म तक तुम्हें स्वीकार करते हैं !
राह–ए–इश्क है अति दुष्कर दोस्तों
जान पर खेलकर ही
दरिया पार करते हैं !!

सत्यनारायण शर्मा 'सत्य'
रावतसर हनुमानगढ़, राजस्थान

घूँघट की बगावत

डिजिटल प्रकाशन के सफलतापूर्वक दो वर्ष पूर्ण होने की ओर अग्रसर
गोरखपुर ही नहीं गोरखपुर से बाहर भी पढ़ा जाने वाला
गोरखपुर से प्रत्येक रविवार को प्रकाशित
हिन्दी साप्ताहिक समाचार

www.ghoonghatkibagawat.com
E-mail : ghoonghatkibagawat@gmail. Com
Facebook: ghoonghatkibagawat

45, बादशाहबाग, जगन्नाथपुर,
गोरखपुर।

घूँघट की बगावत

2

गोरखपुर, रविवार, 21 जून 2020

www.ghoonghatkibagawat.com

अब आर्थिक रूप से खत्म होगा चीन !

चीन की थू–थू कराने वाले घटिया चायनिज प्रोडक्ट पहले से ही विश्व के बाजार में बहुत जलालत झेल चुका है फिर भी चीन अपनी करस्तानियो से बाज नहीं आ रहा । भारत ने चीन को आर्थिक स्थिरता दिया, किन्तु चीन ने भारत के है पीठ में छुरा घोंपने का काम किया है। अब भारत धीरे–धीरे ही सही किन्तु चाइनीज सामानों से अब अपने आपको मुक्त करना शुरू कर देगा। चीन अपना घ टिया उत्पाद गरीब और कंगाल नेपाल और पाकिस्तान के मुल्कों में बेचेगा या यूं कहे कि मुफ्त में बांटेगा ।चीन समूचे विश्व के लिए घातक है, क्योंकि जिस प्रकार पहले करोना जैसी महामारी पूरे विश्व को दिया फिर उसपर से ध्यान भटकाने के लिए, विश्व की दूसरी आर्थिक महाशक्ति भारत को चुनौती देकर नया ड्रामा शुरू किया। चीन ने गलवान घाटी में जो उपद्रव करके अपने पैरो पर कुल्हाड़ी मारी है वो निश्चित ही जिनपिंग के तानशाही को कुचलने के लिए काफी होगा। दुनिया में हजार तरह की चीजे हैं। जो हमारे भारत में आयातित और निर्यातित की जाती हैं। हमें किन चीजों का इस्तेमाल करना है, किनका नहीं यह हमारी जरुरते तय करती हैं। चीनी सामान का बहिष्कार होना चाहिए ये मेरी निजी सोच है किन्तु तरीका क्या हो ये आपकी अपनी विवेकता पर निर्भर होगा । जैसे कि जो चाइनीज चीजे हमने खरीद ली है उसका खर्चा और टैक्स हम भर चुके है अब उन्हे उसके ब्रांड का हमने पता नहीं किया कि तोड़ने का कोई मतलब नहीं क्युकी उसका निर्माण/विनिर्माण कहां से किया गया है, किन्तु आगे से अब हर खरीद से पहले ये पता करेंगे की यह कहा निर्मित है और उसमें भी ज्यादातर स्वदेशी ही हो। आजकल बहुत चर्चा चल रही है कि हमें चीनी उत्पादों का विरोध करना चाहिए।

भारत ने चीन को आर्थिक स्थिरता दिया, किन्तु चीन ने भारत के है पीठ में छुरा घोंपने का काम किया है। अब भारत धीरे–धीरे ही सही किन्तु चाइनीज सामानों से अब अपने आपको मुक्त करना शुरू कर देगा।

उससे हमारा स्वयं का आर्थिक नुकसान भी होगा, किन्तु हम देश के समर्थन में यह निश्चित कर सकते है कि हम आगे से ऐसी कोई चीज या उत्पाद नहीं खरीदेंगे जो चीन में निर्मित हो ताकि ऐसी चीजों की बिक्री कम हो और धीरे धीरे ये चीजें मार्केट में प्रचलन से हट जाए। मैं विश्व के किसी उत्पाद को बढ़िया और खराब नहीं बता रहा किन्तु जिसका विकल्प हमारे देश में हो मतलब जो स्वदेशी हो अथवा वोकल फॉर लोकल जैसा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मन की बात में एक नारा दिया के उपयोग को प्राथमिकता देकर भी राष्ट्रभक्ति निभाई जा सकती है। एक देशभक्त होने के नाते मै सिर्फ ये बता रहा हूं कि मेरे घर में जो मोबाईल फोन या टी वी खरीद कर आती रही है कि हमें चीनी माल चाहिए।

बस, यहीं से मुझे अपना बचपन याद आने लगा। हमें किसी उत्पाद का विरोध क्यों करना चाहिए? अरे, आप उसे मंगाते ही नहीं। आप नहीं चाहते थे कि हम उसका इस्तेमाल करें तो आप लाने वाले को मना कर देते। हमें उसकी आदत नहीं पड़ती। अब आप ये कह सकते हैं कि किसी और ने अनुमति दी थी उसे लाने की। सत्तर साल पहले से वो आ रहा था। चलिए मान लिया। पर जब आप मालिक बने तो आप मना कर देते। हम में से किसी ने कभी कहा था क्या

मुझे बहुत विस्तार में इस विषय में नहीं जाना। हमारे परिजन आयुर्वेद चरक और धर्मयुग वाले हैं। हम सुबह–सुबह राजनीति और घटिया चर्चा नहीं करते। बस इतना कहना है कि जिसे हमें इस्तेमाल नहीं करने की सलाह दी जा रही है, उसे आप मंगाना बंद कर दीजिए। मैं तो बहुत–सी आदतों के बारे में ये मानता हूं कि रोक ऊपर से लगनी चाहिए, नीचे रोक लगने का कोई फायदा नहीं होता। मैं हमेशा से मानता हूं कि बुराई ऊपर से नीचे आती है, नीचे से ऊपर कभी नहीं जाती। हर गंदी चीज ऊपर से नीचे गिरती है, कभी नीचे से ऊपर की ओर नहीं जाती सिवाए धुंआ के।

तो अगर आप चाहते हैं कि हम चीन को रोके तो आप राजनीति छोड़ ,चीन पर आर्थिक प्रतिबन्ध लगाए । हमारे मन पर उसका बुरा असर न पड़े इसलिए टी वी और अखबार वाले को मना कीजिए की चीनी सामान का एड ना करे । आदतें बचपन से लगाई जाती हैं। हिम्मत बचपन से दिखलाई जाती है। संस्कार बचपन से रोपे जाते हैं। बड़ा होने पर तो सख्ती दिखलानी पड़ती है। आप जो नहीं चाहते कि हम न करें, उसे रोकना आपका काम है। हम कभी चीन नहीं जाएंगे उन चीजों को खरीदने जिन्हें रोक कर आप चीन की कमर तोड़ना चाह रहे हैं।

पंकज कुमार मिश्रा

हमने तुमको भाई माना, तुमने पीठ में छुरा भोंकाः वाजपेयी

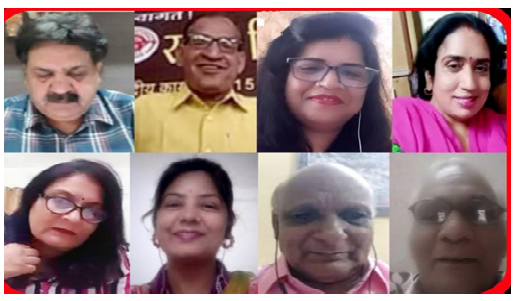

नई दिल्ली। आजादी के बाद भारत में पहली बार ऐसा समय आया है, जब पड़ोसी देश सीमा पर एक साथ गोलीबारी व दूसरी ओर वैश्विक महामारी कोरोना से देश झुझ रहा है। ऐसे पड़ोसी देश को हमने भाई माना था परन्तु वो तो पक्की दुश्मनी निभा रहा है।

उक्त सारगर्भित उद्बोधन राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना इकाई म .प्र. के वेब कवि सम्मेलन में मुख्य अतिथि एवं संचेतना के संरक्षक वरिष्ठ साहित्यकार हरेराम वाजपेयी ने अपने वक्तव्य में दिया। उन्होंने चीन पर कटाक्ष करते हुवे अपनी कविता के माध्यम से कहा कि–'हमने तुमको भाई माना पर तुमने पीठ में छुरा भोंका, शत्रु को मित्र बनाया था और तुमने दिया धोखा हम पंचशील अनुयायी है। तुम लाशो के व्यापारी हो हम समझ नहीं आए अब तक, तुमने क्यों रास्ता रोका।' समारोह की अध्यक्षता डॉ. शैलेन्द्र शर्मा कुलान. शासक विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन ने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि चीन के कुटिल इरादों को ध्वस्त करने का वक्त आ गया है। कोरोना महामारी ने यह दिखाया है कि नि. रंकुश चीन की दुनिया को भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है। हिमालयीय क्षेत्र में चीन के नापाक मंसूबों से निपटने के लिए भारत की वीर सेना एवं सरकार मजबूत है। कवि सम्मेलन का शुभारम्भ मधुर स्वर की प्रदेश महासचिव श्रीमती पायल परदेशी ने सरस्वती वंदना एवं अपनी कविता पर्यावरण के संरक्षण के समर्पित रचना 'करे एक दिन जतन फिर हो जाए मगन, निशदिन पर्यावरण पर काम होना चाहिए।' कार्यक्रम में अतिथियों एवं कवियों को शाब्दिक स्वागत राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना के अध्यक्ष डॉ. प्रभु चौधरी ने कहा कि हमारी संस्था का मुख्य उद्देश्य राजभाषा, सम्पर्क भाषा हिन्दी को राष्ट्रभाषा के सर्वोच्च पद की प्रतिष्ठा दिलाना है। हम अपने दैनिक कार्यो में हिन्दी भाषा एवं नागरी लिपि का भी प्रयोग करेंगे। संचेतना नाम के अनुरूप सतत समारोह के माध्यम से सक्रिय बने रहे। कवियित्री एवं राष्ट्रीय महासचिव श्रीमती अमृता अवस्थी ने काव्य रचना

'गर भाषा मौन ना होती,
जब दिन को दीन कहा जाये
और सुख भी सूख–सूख जाये,
जब दिल का चौन भी चेन होने लगे,

वरिष्ठ साहित्यकार शिक्षक संचेतना के परामर्शदाता श्री अनिल ओझा ने कहा–

अद्भुत भाईचारा हो
चाहे वह मंदिर, मस्जिद हो
चर्च या गुरूद्वारा लगा
सभी के निर्माणो में वहीं
ईंट पत्थर गारा
करे इबादत पूजन अर्चन
सबकी मंजिल एक है।

राष्ट्रीय कार्यालय सचिव श्रीमती प्रभा बैरागी ने गीत 'चलना सिखा दिया है, गलना सीखा दिया है, घनघोर आंधियों में चलना सीखा दिया है।' प्रदेशाध्यक्ष दिनेश परमार ने मेरी मंजिल ना पुछे कि मेरी मंजिल कहां है, अभी तो सफर का इरादा क्या है। कवि सम्मेलन की संचालिका एवं राष्ट्रीय सचिव रागिनी स्वर्णकार(शर्मा) ने कवितामय संचालन में **'नेह की मधु रागिनी से यूं सजानी चाहिए। जिन्दगी इक है गजल सी गुनगुनानी चाहिए।' दर्द की ये घाटियाँ भरती न रोने से कभी, इनको हँसके पार करले वो जवानी चाहिए** जैसी पंक्तियों को सुनाकर वाहवाही एवं दाद बटोरीं। इस अवसर पर वरिष्ठ कवियित्री एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष उर्षा शर्मा भी उपस्थित थी। अंत में आभार दिनेश परमार प्रदेशाध्यक्ष ने आभार व्यक्त किया।

भारत के उसके पड़ोसी देशों के साथ बिगड़ते संबंध

किसी भी देश के लिए उसके पड़ोसी देश से कैसे संबंध हैं? इस बात का सीधा प्रभाव उस देश के विकास पर पड़ता है। भारत के अपने कुछ पड़ोसी देशों के साथ मित्रता पूर्ण संबंध है ले. किन जहाँ एक ओर पाकिस्तान के साथ हमारे संबंध हमेशा से मनमुटाव से भरे रहे हैं दूसरी ओर चीन के साथ हमारे व्यापारिक रिश्ते हैं जिसके चलते 1962 के बाद चीन के साथ हमारा कोई युद्ध नहीं हुआ। कई बार भारत पर चीन अपनी ताकत दिखाने की कोशिश करता है, लेकिन व्यापारिक रिश्ते होने के नाते कभी कोई बड़ा कदम नहीं उठाता है।

आज पूरी दुनिया कोरोना वायरस नामक महामारी से परेशान हैं जिसका धीरे–धीरे भारत में फैलाव बढ़ता जा रहा है। ऐसे में भारत को चाहिए कि वह अपनी पूरी ताकत इससे निपटने में लगा दें। किन्तु इस आपातकाल की स्थिति के समय में भी हम अपने पड़ोसी देशों द्वारा हो रहे मन मुटावो में फसे हुए हैं।

एक ओर जहां पाकिस्तान हमेशा की तरह हम पर हमला कर सीजफायर तोड़ रहा है। वहीं दूसरी ओर चाइना हमेशा की तरह हमारी जमीन पर कब्जा करने की कोशिश में लगा हुआ है, किन्तु सर्वाधिक चौंकाने वाला कार्य नेपाल से उठने वाला विरोध है। हमारे देश के हिस्से में आने वाले भाग को नेपाल द्वारा अपना बताने की बात ओर अब जल्द से जल्द अपनी संविधान द्वारा उनको अपना बताने के लिए बिल पारित करवाने की कोशिश। हमारी समस्या बढ़ा रही हैं। इन सभी कारणों से हमारी सरकार की विदेश नीति पर सवाल उठने लगे हैं। ऐसा होना लाजमी भी है। जिस तरीके की स्थिति से आज हम गुजर रहे हैं। उसमें यदि सरकार की उस विदेश नीति पर सवाल नहीं उठाया जाएगा, जिसके चलते हमारी सरकार करोड़ों खर्च कर प्रत्येक देश की यात्रा कर रहीं हैं। आपा. तकाल के समय में हम अपने पड़ोसी देशों के साथ बिगड़ते संबंधों के चलते पूरी दुनिया की नजरों में आ रहें हैं। तब हमें विचार करना होगा जरूर कि हमारी विदेश नीति में ऐसी कौन सी कमी रह गई है। जिसके कारण हमें आज हमें यह दिन दे खना पड़ रहा है। हमारी सरकार को देश के लोगों को अंधेरे में रखने की कोशिश करते हुए।

चीन, हमारी ही सीमा पर हमें युद्ध की चुनौती दे और हम उनकी कम्पनियों का स्वागत करें अपने देश में आ कर व्यापार करने के लिए। जब चीन का रवैया हमारी प्रति सही नहीं है तब हम क्यों नहीं चीन से आने वाली कम्पनियों को अपने यहां व्यापार करने से रोकें।

लड़की और रोटी का संबंध याद दिलाने जैसी बातें करने के साथ पर कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लेने चाहिए। जिसके चलते देश और देश के लोग सुरक्षित रह सके। हमें अन्य देशों से बातचीत करने का प्रयास करना चाहिए। उनकी समस्याओं को समझना चाहिए ओर आपस के मन मुटावो को समाप्त करने कि कोशिश करनी चाहिए।

बीते सोमवार की रात चीन के सैनिकों के साथ झड़प में हमारे देश के 20 सैनिकों की जानें चली गईं। यह देश के लिए दुख की बात है। मुख में राम बगल में छुरी वाली कहावत को चरितार्थ करते हुए चीन हमारे देश के सैनिकों पर हमला कर रहा है। हमारी सरकार हमारे यहां शुरू होने वाले नए प्रोजेक्ट में चीन की कम्पनियों को भागीदार बना रहीं हैं। जहां फाइव जी के परिक्षण के लिए पूरी दुनिया चीन को रोक रहा है। वहीं भारत में उन्हें इसके लिए इजाजत मिल चुकी है।

चीन, हमारी ही सीमा पर हमें युद्ध की चुनौती दे और हम उनकी कम्पनियों का स्वागत करें अपने देश में आ कर व्यापार करने के लिए। जब चीन का रवैया हमारी प्रति सही नहीं है तब हम क्यों नहीं चीन से आने वाली कम्पनियों को अपने यहां व्यापार करने से रोकें। हमारी सरकार चीन को पूरी तरह से हमारे देश में व्यापार करने से नहीं रोक सकती है, किन्तु कुछ स्थानों पर तो रोक लगा सकती है।

नए प्रोजेक्ट में चीन की कम्पनियों को कार्य देने से रोका जा सकता है।

हमारे देश के सैनिकों की जिंदगी की कीमत हम इस आधार पर नहीं आंक सकते हैं। कि किसी अन्य देश के कितने सैनिकों की मौत हुई। माना कि हमारा देश एक विशाल संख्या वाला देश है। लेकिन यहां हर प्रत्येक व्यक्ति का जीवन अनमोल है। ऐसा नहीं है कि कोई व्यक्ति फौज में भर्ती हुआ है तो उसकी जिंदगी मरने के लिए ही है। इस लिए हमें केवल अपने सैनिकों की किसी अन्य देश की सैनिकों के साथ हुई मौत की तुलना नहीं करनी है। बल्कि हमें प्रयास करना है हर उस स्थान पर ऐसे देश को दबाने का जहां हमारा उनसे संबद्ध हो।

सरकार को चाहिए कि वह देश के लोगों से कोई भी बात ना छुपाएं। ताकि इस समय सरकार और पूरा देश एक साथ खड़े हो कर चीन का विरोध कर सकें।

हमें इस वक्त झूठें ख्याली पुलाव बनाने नहीं बैठना चाहिए। हमें जल्द से जल्द कोशिश करनी चाहिए इस सारे मामले को सुलझाने का।

ऐसा नहीं होना चाहिए कि हम बातचीत कर के मामले को सुलझाने की कोशिश करते रहे और वह हमारे देश पर अंदर और बाहर से हमला करने की तैयारी। हमें बातचीत करने के साथ ही दबाव बनाने का प्रयास भी करना पड़ेगा। तभी इस बात का हल निकल सकता है।

राखी सरोज

'ब्रह्म समाज के एक कट्टर समर्थक रहे 'देशबन्धु''

गोरखपुर। ''देशबन्धु, महान स्वतंत्रता सेनानी, राष्ट्रवादी एवं प्रसिद्ध विधि शास्त्री चितरंजन दास के पुण्यतिथि के अवसर पर पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन सामाजिक कार्यकर्ता सुभाष चन्द्र अकेला के शास्त्रीनगर स्थित आवास पर आज (कोरोना वायरस के चलते उचित दूरी व मास्क का प्रयोग कर) सम्पन्न हुआ। जिसकी अध्यक्षता सामाजिक कार्यकर्ता सुभाष चन्द्र अकेला एवं संचालन युवा समाजसेवी आशीष प्रिय अग्रहरि ने किया।

विचार गोष्ठी में उपस्थित विभिन्न राजनीतिक व सामाजिक संगठनों से सम्बद्ध लोगो ने ''देशबन्धु'' चितरंजन दास के चित्र पर माल्यापर्ण करते हुए कहा कि ''देशबन्धु एक महान स्वतंत्रता सेनानी थे, जिनका जीवन ''भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में युगान्तकारी था''।

विचार गोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे सामाजिक कार्यकर्ता सुभाष चन्द्र अकेला ने कहा कि ''ब्रह्म समाज के एक कट्टर समर्थक ''देशबन्धु अपनी तीक्ष्ण बुद्धि और पत्रकारीय दृष्टिकोण के लिए जाने–जाते थे। असहयोग आन्दोलन के अवसर पर इन्होंने अपनी वकालत छोड़ गॉधी जी के साथ हो लिए और 1921 ई0 में अहमदाबाद में हुये कांग्रेस के अधिवेशन के अध्यक्ष भी रहें। असहयोग आन्दोलन के स्थगित और गॉधी जी के गिरफ्तारी हो जाने के बाद ब्रिटिश शासन द्वारा बनाये गये 1919 के कानून (रोलट एक्ट) के क्रियान्वन के विरोध में 01 जनवरी 1923 में कांग्रेस के ही अन्दर स्वराज दल की स्थापना हुई जिसके ये संस्थापक थे। क्रमशः स्वराज दल स्वराज पार्टी का रूप ले लिया। श्री अकेला ने कहा कि देशबन्धु के नेतृत्व में स्वराज पार्टी ने देश पर इतना अधिक प्रभाव बढ़ा लिया कि तत्कालीन भारत मंत्री लार्ड बर्केनहैड के लिए भारत सांविधानिक सुधारों के लिए चितरंजन दास से कोई न कोई समझौता करना जरूरी हो गया। लेकिन दुर्भाग्यवश अधिक परिश्रम करने और जेल जीवन की कठिनाईयों को न सहन करने के कारण श्री दास बीमार पड़ गये और आज ही के दिन (16 जून 1925) उनका निधन हो गया, फलस्वरूप भारतीय स्वाधीनता की समस्या के शान्तिमय समाधान का अवसर नष्ट हो गया। उन्हें देशवासी प्यार से देशबन्धु कहते थे।

उपरोक्त अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी के0पी0 गुप्ता व सुरेश निषाद ने कहा कि चितरंजन दास कलकत्ता उच्च न्यायालय के विख्यात वकील थे, जिन्होनें अलीपुर बम केस में अरविन्द घोष की पैरवी की, और अपनी चलती हुई वकालत को छोड़ कर गॉधी जी के असहयोग आन्दोलन में भाग लिया और पूर्णतया राजनीति में आ गये।

इसी क्रम में युवा समाजसेवी प्रदीप अग्रहरि ने कहा कि ''श्री दास भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रचार करते हुए सारे देश का भ्रमण किया और अपनी समस्त सम्पत्ति राष्ट्र हित में समर्पित कर दिया। वे कलकत्ता के नगर प्रमुख चुने गये और उनके साथ नेताजी सुभाष चन्द्र बोस कलकत्ता निगम में मुख्य कार्याधिकारी नियुक्त हुये। देश का जन–जन आज देशबन्धु चितरंजन दास को याद कर उनके प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धाजंलि अर्पित कर रहा है।

विचार गोष्ठी में मुख्य रूप से सामाजिक कार्यकर्ता सुभाष चन्द्र 'अकेला', विवेक अग्रहरि, सुरेश निषाद, के.पी.गुप्ता, प्रदीप अग्रहरि, आशीष प्रिय गुप्ता, सूरज कुमार चौरसिया, मुकेश, विकास, अल्ताफ खान, जितेन्द्र कुमार सोनकर, सहित तमाम स्थानीय गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

घूँघट की बगावत

3

गोरखपुर, रविवार, 21 जून 2020 www.ghoonghatkibagawat.com

योग को अपनाएं मन, मस्तिष्क और शरीर स्वस्थ रखें

16 वीं लोकसभा के गठन के बाद भारत के आह्वान पर संयुक्त राष्ट्र संध में योग दिवस मनाने का प्रस्ताव रखा गया जिसे स्वीकार करते हुए 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय विश्व योग दिवस के रूप में मनाने के लिए घोषित किया गया।

आज विश्व के लगभग190 देश इस दिवस को मनाने लगे है बल्कि इसकी उपयोगिता और लाभ को समझने लगे हैं। इसे आज अंतराष्ट्रीय स्तर पर मंच प्रदान करवाने के लिए देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

भारतीय परम्पराओं में योग का स्थान आदिकाल से ही रहा है जिसे ऋषि मनीषियों ने लम्बी अवधि तक तप ध्यान में योग प्रभाव से करते थे। योग मन को एकाग्र चित करने का प्रवल मार्ग है। जिससे अनेक प्रकार की ऊर्जा के साथ नियंत्रण क्षमता विकसित होती हैं। योग की महत्ता को बहुत करीब से जानकर विश्व ने इसे अपनाया है और अपने जीवन के दिनचर्या में उतारकर योग से मिलने वाले लाभ को अनुभव करने लगे है यह भारत के लिए गौरव की बात है। इससे मिलने वाले लाभ मन की एकाग्रता शांति तथा ऊर्जा से लवरेज रखता है।यह हमारे पूर्वजो के द्वारा प्रदान की गयी अपूर्व ऊर्जा थी जिसे अब अंतराष्ट्रीय स्तर पर भी लोग समझने और सराहने लगे हैं। भारत ऋषियों मनीषियों संत कबीरो का देश रहा है प्रायः सभी ने योग को अपनी ऊर्जा का माध्यम माना है। जिसका जिक्र वेद–पुरानो, गीता, बाइबिल आदि ग्रंथो में मिलता है।योग व्यायाम का ऐसा प्रभावशाली प्रकार है, जिसके माध्याम से न केवल शरीर के अंगों बल्कि मन, मस्तिष्क और आत्मा में संतुलन बनाया जाता है। योग प्रचीन समय से ही अपनाया जा रहा है। वैदिक संहिताओं के अनुसार तपस्वियों के बारे में प्राचीन काल से ही वेदों में इसका उल्लेख मिलता है। सिंधु घाटी सभ्यता में भी योग और समाधि को प्रदर्शति करती मूर्तियां प्राप्त हुईं।योग की महिमा और महत्व को जानकर इसे स्वस्थ्य जीवनशैली हेतु बड़े पैमाने पर अपनाया जा रहा है, जिसका प्रमुख कारण है व्यस्त, तनावपूर्ण और अस्वस्थ दिनचर्या में इसके सकारात्मक प्रभाव।

योग मन को एकाग्र चित करने का प्रवल मार्ग है जिससे अनेक प्रकार की ऊर्जा के साथ नियंत्रण क्षमता विकसित होती हैं।

भगवद गीता में योग के जो तीन प्रमुख प्रकार बताए गए हैं – 1 कर्मयोग – इसमें व्यक्ति अपने स्थिति के उचित और कर्तव्यों के अनुसार कर्मों का श्रद्धापूर्वक निर्वाह करता है। 2 भक्ति योग – इसमें भगवत कीर्तन प्रमुख है। इसे भावनात्मक आचरण वाले लोगों को सुझाया जाता है। 3 ज्ञाना योग – इसमें ज्ञान प्राप्त करना अर्थात ज्ञानार्जन करना शामिल है। आज के इस दौरभाग भरी जिन्दगी में थोडे समय के ठहराव को यदि योग दिनचर्या में शामिल हो तो बहुत सारे झंझटो से मुक्ति तो मिलती ही है स्वास्थ्य को भी दुर्लभ लाभ मिलता है अतः इसे आज बडे पैमाने पर अपनाया जाना भारत के लिए सुखद है । **आशुतोष,** पटना बिहार

ओज और जोश की साक्षात् प्रतिमूर्ति रानी लक्ष्मी बाई

गोरखपुर। आज शास्त्रीनगर में जहां पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एल.ए.सी.) पर देश की सरहद की हिफाजत में शहीद जवानों को भावभीनी श्रद्धाजंलि दी गई। वहीं स्वतंत्रता की ज्योति, वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई के शहादत को गत शुक्रवार को शास्त्रीनगर में एक कार्यक्रम आयोजित कर नगरवासियों ने (कोरोना के कारण उचित दूरी व मास्क का प्रयोग कर) ''विरांगना दिवस'' के रूप में मनाया और उनके चित्र पर माल्यार्पण करते हुए उन्हें असीम निर्भीकता की साक्षात प्रतिमूर्ति बताया। इसी क्रम में एक विचार गोष्ठी का भी आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता सामाजिक कार्यकर्ता सुभाष चन्द्र ''अकेला'' एवं संचालन समाजसेवी सुरेश निषाद ने किया।

विचार गोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे सामाजिक कार्यकर्ता सुभाष चन्द्र ''अकेला'' ने पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर देश की सरहद की हिफाजत में शहीद जवानों के प्रति नम आँखों से भावभीनी श्रद्धाजंलि अर्पित करते हुए कहा कि **अब चीन को यह बताने की शख्त जरूरत है कि वह अपने शर्तो पर रिश्ते कायम नहीं कर सकता। भारत सरकार को उसके खिलाफ सारे मोर्चे खोलने में देर नहीं करनी चाहिए। उसे वहां चोट पहुचाई जानी चाहिए जहां सबसे अधिक असर हो।** वहीं शौर्य सुपुत्री महारानी लक्ष्मीबाई के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए कहा कि ''1857 के स्वतंत्रता संग्राम की सूत्रपात करने वाली महारानी लक्ष्मीबाई आजादी की लड़ाई लड़ने वाले सभी दीवानों और शहीदों की प्रमुख प्रेरणा श्रोत रहीं।'' उन्होंने कहा कि स्वाभिमान से लबरेज शौर्य सुपुत्री भारत माँ की इस लाडली ने जब यह महसूस किया कि अब वह अंग्रेजी दुश्मनों से बच नहीं पायेगी तब उन्होंने अपने सैनिकों से कहा कि 'देखना शत्रु मेरे शरीर को हाथ न लगा पाये' और हुआ भी यही। उनके सैनिकों ने रानी के स्वर्गवास के बाद लकड़ियों के अभाव में पास ही स्थित एक साधु की कुटी में उनके शव को रखकर कुटी को आग लगा दी और रात भर में वहाँ एक चबूतरा (मजार) बना दिया। सुबह होते ही, जब अंग्रेज सैनिकों ने मजार के पास उपस्थित एक स्वामीभक्त गुलमुहम्मद से पूछा कि यह किसकी मजार है तो उसने उत्तर दिया कि यह हमारे पीर का मजार है, बहुत बड़ा बली था, हमारा यह पीर। तुम भी इन्हें सिर झुकाओ। आज भी वहाँ से गुजरने वालों के सिर सहज ही श्रद्धा से झुक जाते हैं और वे गुनगुनाने लगते हैं–

बुंदेले हर बोलो के मुँह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी। सचमुच ओज और जोश की साक्षात प्रतिमूर्ति रही महारानी लक्ष्मीबाई का समूचा जीवन आज की नारी शक्ति के लिए प्रेरणा श्रोत है। उनकी बेमिसाल शहादत, त्याग और देशभक्ति को देखते हुए सरकार को चाहिए कि उनके शहादत दिवस को 'वीरांगना दिवस' घोषित कर सार्वजनिक अवकाश तय करें।

उपरोक्त अवसर पर क्रान्तिकारी विचारों से लबरेज समाजसेवी सुरेश निषाद व के.पी. गुप्ता ने कहा कि ''समूचे विश्व में भारत ही एक मात्र ऐसा देश है जहां वीरों के साथ–साथ वीरांगनाओं ने भी इतिहास रचे हैं।'' अपने देश की सुरक्षा व स्वाभिमान के प्रति महारानी लक्ष्मीबाई के त्याग, तपस्या और बलिदान हमेशा अजर–अमर रहेगा। इसी क्रम में युवा समाजसेवी आशीष प्रिय गुप्ता ने कहा कि ''महारानी लक्ष्मीबाई का त्याग, तपस्या और समपर्ण भारतीय संस्कृति की न केवल अमूल्य धरोहर हैं बल्कि नारी अस्मिता की एक बेमिसाल उदाहरण हैं। विचार गोष्ठी में मुख्य रूप से सामाजिक कार्यकर्ता सुभाष चन्द्र 'अकेला", के.पी. गुप्ता, आशीष प्रिय अग्रहरि, चन्दन प्रिय अग्रहरि, मुकेश, विकास, अल्ताफ खान, सूरज, जितेन्द्र कुमार सोनकर, सहित तमाम स्थानीय गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण सम्पर्क सूत्र

एम्बुलेन्स –	108
मेडिकल कालेज –	2501736
जिला चिकित्सालय–	2332177
गोरखनाथ चिकित्सालय–	2257570, 2257138
जिला महिला चिकित्सालय–	2333500
मुख्य चिकित्साधिकारी–	2336622, 9450883406
महिला चिकित्साधिकारी–	9454455381
प्राचार्य मेडिकल कालेज–	9415210282
मुख्य पशु चिकित्साधिकारी–	05512332236
कुलपति –	2340458, 2330767
मण्डलायुक्त –	94544175020
सीडीओ –	2335927, 2333082
जिलाधिकारी –	9454417544
जीडीए उपाध्यक्ष –	9415210451
एडीएम एफ/आर–	9454417615
एडीएम प्रशासन –	9454416210
एडीएम सिटी –	9454416211
सिटी मजिस्ट्रेट –	9454416512
तहसील सदर –	9454416222

गोरखनाथ मंदिर कार्यालय
2255453, 2255455

प्राप्त सम्पर्क सूत्रों का यहां पर संकलन मात्र जनसहयोग की भावना से प्रेरित है। इसमें किसी प्रकार की त्रुटि के लिए समाचार पत्र उत्तरदायी नहीं होगा। विवाद की स्थिति में मूल दूरभाष निर्देशिका ही मान्य होगी।

अपने आसपास हो रहे अन्याय, अत्याचार, अव्यवस्था अथवा घटना–दुर्घटनाओं के विरूद्ध आवाज उठायें और अपनी संघर्ष क्षमता को कलम के जरिये अभिव्यक्त करें भेजदें ghoonghatkibagawat@gmail.com पर हम आपकी आवाज को बुलन्द करेंगे अपने साप्ताहिक समाचार पत्र के माध्यम से।

स्थानीय पुलिस प्रशासन सम्पर्क सूत्र : पुलिस स्टेशन इंचार्ज (थाना प्रभारी)

सब इंस्पेक्टर यातायात–	9532911249
जी.आर.पी.	9454404411
बड़हलगंज	9454403501
बांसगांव	9454403502
बेलीपार	9454403503
बेलघाट	9454403504
कैम्पियरगंज	9454403505
कैंट	9454403506
चौरीचौरा	9454403507
चिलुआताल	9454403508
गगहा	9454403509
गोला	9454403510
गोरखनाथ	9454403511
गुलरिहा	9454403512
हरपुरबुदहट	9454403513
झंगहा	9454403514
खजनी	9454403515
खोराबार	9454403516
कोतवाली	9454403517
महिला थाना	9454403518
पिपराईच	9454403519
पीपीगंज	9454403520
राजघाट	9454403521
सहजनवां	9454403522
शाहपुर	9454403523
सीकरीगंज	9454403524
तिवारीपुर	9454403525
उरुवा	9454403526
जोनल सचिव यू.पी.ए.एन.एस.	945168786
मुख्य सुरक्षा आयुक्त	9794840701
सी.पी.आर.ओ.	974840055
महापौर	7607003600
नगर आयुक्त	7607003701
उपनगर आयुक्त	7607003612
नगर स्वास्थ्य अधिकारी	7607003696
क्षेत्राधिकारी यातायात	941520981
कोतवाली	9454401411
कैंट	9454401412
गोरखनाथ	9454401413
बांसगांव	9454401414
खजनी	9454401415
चौरीचौरा	9454401416
कैम्पियरगंज	9454401417
आई.जी.पुलिस	05512333707
	05512200797
पुलिस उप महानिरीक्षक	05512201047
डिप्टी कमिश्नर ऑफ पुलिस)	05512200668
वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक	05512200858 / 9454400273
पुलिस अधीक्षक नगर	05512336004 / 9454400273
पुलिस अधीक्षक ग्रामीण	05512233015 / 9454401055
साइबर क्राइम प्रकोष्ठ एल.आई.यू. गोरखपुर	09454401726
महिला हेल्पलाइन	1090, 181
फायर बिग्रेड	101, 2333333
पुलिस नियन्त्रण कक्ष	100

घूँघट की बगावत

गोरखपुर, रविवार, 21 जून 2020

www.ghoonghatkibagawat.com

मरुस्थलीकरण और सूखा:दुनिया के समक्ष बड़ी चुनौती

मरुस्थलीकरण जमीन के खराब होकर अनुपजाऊ हो जाने की ऐसी प्रक्रिया होती है, जिसमें जलवायु परिवर्तन तथा मानवीय गतिविधियों समेत अन्य कई कारणों से शुष्क, अर्द्ध–शुष्क और निर्जल अर्द्ध–नम इलाकों की जमीन रेगिस्तान में बदल जाती है। अतः जमीन की उत्पादन क्षमता में कमी और ह्रास होता है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेश ने 'विश्व मरुस्थलीकरण रोकथाम दिवस' पर अपने वीडियो संदेश में सचेत किया है कि दुनिया हर साल 24 अरब टन उपजाऊ भूमि खो देती है। उन्होंने कहा कि भूमि की गुणवत्ता खराब होने से राष्ट्रीय घरेलू उत्पाद में हर वर्ष आठ प्रतिशत तक की गिरावट आ सकती है। भूमि क्षरण और उसके दुष्प्रभावों से मानवता पर मंडराते जलवायु संकट के और गहराने की आशंका है।

मरुस्थलीकरण की चुनौती–
मरुस्थलीकरण, भूमि क्षरण और सूखा बड़े खतरे हैं जिनसे दुनिया भर में लाखों लोग, विशेषकर महिलाएं और बच्चे, प्रभावित हो रहे हैं। इस तरह के रुझानों को 'तत्काल' बदलने की आवश्यकता है क्योंकि इस से मजबूरी में होने वाले विस्थापन में कमी आ सकती है, खाद्य सुरक्षा सुधर सकती है और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिल सकता है। साथ ही यह 'वैश्विक जलवायु इमरजेंसी को दूर करने में भी मदद कर सकती है। मरुस्थलीकरण की चुनौती से निपटने के लिए अंतरराष्ट्रीय प्रयासों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से इस दिवस को 25 वर्ष पहले शुरू किया गया था जो हर वर्ष 17 जून को मनाया जाता है। मरुस्थलीकरण से निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र संधि कानूनी रूप से बाध्यकारी एकमात्र अंतरराष्ट्रीय समझौता है जो पर्यावरण और विकास को स्थायी भूमि प्रबंधन से जोड़ता है।

दिवस का महत्व– 2019 में इस विश्व दिवस पर 'लेट्स ग्रो द फ्यूचर टुगेदर' का नारा दिया गया है और इसमें तीन प्रमुख मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया गया सूखा, मानव सुरक्षा और जलवायु। संयुक्त राष्ट्र के अनुमान के मुताबिक 2025 तक दुनिया के दो–तिहाई लोग जल संकट की परिस्थितियों में रहने को मजबूर होंगे. उन्हें कुछ ऐसे दिनों का भी सामना करना पड़ेगा जब जल की मांग और आपूर्ति में भारी अंतर होगा. ऐसे में मरुस्थलीकरण के परिणामस्वरूप विस्थापन बढ़ने की संभावना है और 2045 तक करीब 13 करोड़ से ज़्यादा लोगों को अपना घर छोड़ना पड़ सकता है। उल्लेखनीय है कि भारत में 29.3 प्रतिशत भूमि क्षरण से प्रभावित है। मरुस्थलीकरण व सूखे की बढ़ती भयावहता को देखते हुए इससे मुकाबला करने के लिए वैश्विक स्तर पर जागरूकता के प्रसार की आवश्यकता महसूस की गई। उल्लेखनीय है कि संयुक्त राष्ट्र संघ की आम सभा में वर्ष 1994 में मरुस्थलीकरण रोकथाम का प्रस्ताव रखा गया जिसका अनुमोदन दिसम्बर 1996 में किया गया। वहीं 14 अक्टूबर 1994 को भारत ने मरुस्थलीकरण को रोकने के लिए संयुक्त राष्ट्र अभिसमय (यूएनसीसीडी) पर हस्ताक्षर किये। जिसके पश्चात् वर्ष 1995 से मरुस्थलीकरण का मुकाबला करने के लिए यह दिवस मनाया जाने लगा।

मरुस्थलीकरण के अनेक कारण हैं–
मानव निर्मित कारणों में घास–फूस की अधिक चराई, उत्पादकता और जैव–विविधता को कम करता है। वर्ष 2005 और 2015 के बीच भारत ने 31फीसद घास के मैदान खो दिये। वनों की कटाई से ग्रीनहाउस गैसों के प्रभाव में वृद्धि तो होती है साथ ही धरती अपना परिधान लूटा देती है, काटो और जलाओ' कृषि पद्धति मिट्टी के कटाव के खतरे को बढ़ाती है। उर्वरकों का अतिप्रयोग और अतिवृष्टि मिट्टी की खनिज संरचना को असंतुलित करते हैं। जलवायु परिवर्तन तापमान, वर्षा, मरुस्थलीकरण को बढ़ा सकता है। प्राकृतिक आपदाएँ जैसे–बाढ़, सूखा, भूस्खलन, पानी का क्षरण, पानी का कटाव उपजाऊ मिट्टी का विस्थापन कर सकता है। हवा द्वारा रेत का अतिक्रमण भूमि की उर्वरता को कम करता है जिससे भूमि मरुस्थलीकरण के लिये अतिसंवेदनशील हो जाती है।

> मरुस्थलीकरण, भूमि क्षरण और सूखा बड़े खतरे हैं, जिससे दुनिया भर में लाखों लोग, विशेषकर महिलाएँ और बच्चे प्रभावित हो रहे हैं। ऐसे में इस समस्या का तत्काल समाधान आज वक्त की माँग हो गई है।

भारत की वर्तमान स्थिति–
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मरुस्थलीकरण भारत की प्रमुख समस्या बनती जा रही है। दरअसल इसकी वजह करीब 30 फीसदी जमीन का मरुस्थल में बदल जाना है। उल्लेखनीय है कि इसमें से 82 प्रतिशत हिस्सा केवल आठ राज्यों राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, जम्मू एवं कश्मीर, कर्नाटक, झारखंड, ओडिशा, मध्य प्रदेश और तेलंगाना में है।सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट (सीएसई) द्वारा जारी ष्स्टेट ऑफ एनवायरमेंट इन फिगर्स 2019ष की रिपोर्ट के मुताबिक 2003–05 से 2011–13 के बीच भारत में मरुस्थलीकरण 18.7 हेक्टेयर तक बढ़ चुका है। वही सूखा प्रभावित 78 में से 21 जिले ऐसे हैं, जिनका 50 फीसद से अधिक क्षेत्र मरुस्थलीकरण में बदल चुका है। भारत का 29.32 फीसदी क्षेत्र मरुस्थलीकरण से प्रभावित है। इसमें 0.56 फीसदी का बदलाव देखा गया है। गौरतलब है कि गुजरात में चार जिले ऐसे हैं, जहाँ मरुस्थलीकरण का प्रभाव देखा जा रहा है, इसके अलावा महाराष्ट्र में 3 जिले, तमिलनाडु में 5 जिले, पंजाब में 2 जिले, हरियाणा में 2 जिले, राजस्थान में 4 जिले, मध्य प्रदेश में 4 जिले, गोवा में 1 जिला, कर्नाटक में 2 जिले, केरल में 2 जिले, जम्मू कश्मीर में 5 जिले और हिमाचल प्रदेश में 3 जिलों में मरुस्थलीकरण का प्रभाव है। वर्ष 2019 में विश्व मरुस्थलीकरण और सूखा रोकथाम दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह के दौरान भारत ने पहली बार 'संयुक्त राष्ट्र मरुस्थलीकरण रोकथाम कन्वेंशन' से संबंधित पक्षकारों के सम्मेलन के 14वें सत्र की मेजबानी की। इस बैठक का आयोजन 29 अगस्त से 14 सितंबर, 2019 के बीच और दिल्ली में किया गया। भारत में भूमि के क्षरण से देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 30 प्रतिशत प्रभावित हो रहा है। भारत लक्ष्यों को प्राप्त करने के साथ–साथ इस समझौते के प्रति संकल्पबद्ध है। मिट्टी के क्षरण को रोकने में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना , मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन योजना,प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, प्रति बूंद अधिक फसल जैसी भारत सरकार की विभिन्न योजनाएँ काम कर रही हैं।

निवारण के उपाय– वनीकरण को प्रोत्साहन इस समस्या से निपटने में सहायक हो सकता है,कृषि में रासायनिक उर्वरकों के स्थान पर जैविक उर्वरकों का प्रयोग सूखे को कम करता है। फसल चक्र को प्रभावी रूप से अपनाना और सिंचाई के नवीन और वैज्ञानिक तरीकों को अपनाना जैसे बूँद–बूँद सिंचाई, स्प्रिंकलर सिंचाई आदि। मरुस्थलीकरण के बारे में जागरूकता बढ़ाएँ और वृक्षारोपण को बढ़ाया जाना चाहिये। धरती पर वन सम्पदा के संरक्षण के लिए वृक्षों को काटने से रोका जाना चाहिए इसके लिए सख्त कानून का प्रावधान किया जाना चाहिए। साथ ही रिक्त भूमि पर, पार्कों में सड़कों के किनारे व खेतों की मेड़ों पर वृक्षारोपण कार्यक्रम को व्यापक स्तर पर चलाया जाए। जरूरत इस बात की भी है कि इन स्थानों पर जलवायु अनुकूल पौधों–वृक्षों को उगाया जाए। मरुस्थलीकरण से बचाव के लिए जल संसाधनों का संरक्षण तथा समुचित मात्र में विवेकपूर्ण उपयोग काफी कारगर भूमिका अदा कर सकती है। इसके लिए कृषि में शुष्क कृषि प्रणालियों को प्रयोग में लाने को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। मरुभूमि की लवणता व क्षारीयता को कम करने में वैज्ञानिक उपाय को महत्व दिया जाना चाहिए।ग्रामीण क्षेत्रों में स्वतः उत्पन्न होने वाली अनियोजित वनस्पति के कटाई को नियंत्रित करने के साथ ही पशु चरागाहों पर उचित मानवीय नियंत्रण स्थापित करना चाहिए।

आगे की राह–जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को स्थिर करने, वन्यजीव प्रजातियों को बचाने और समस्त मानव जाति की रक्षा के लिये मरुस्थलीकरण को समाप्त करना होगा। जंगल की रक्षा करना हम सबकी जिम्मेदारी है और दुनिया भर के लोगों और सरकारों को इसे निभाना चाहिये। मरुस्थलीकरण, भूमि क्षरण और सूखा बड़े खतरे हैं, जिससे दुनिया भर में लाखों लोग, विशेषकर महिलाएँ और बच्चे प्रभावित हो रहे हैं। ऐसे में इस समस्या का तत्काल समाधान आज वक्त की माँग हो गई है। चूँकि इस समाधान से जहाँ भूमि संरक्षण और उसकी गुणवत्ता बहाल होगी, वहीं विस्थापन में कमी आयेगी, खाद्य सुरक्षा सुधरेगी और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलने के साथ वैश्विक जलवायु परिवर्तन से संबंधित समस्याओं से निजात मिल सकेगा। मरुस्थलीकरण व सूखा से मुकाबला करने के लिए विश्व मरुस्थलीकरण रोकथाम दिवस, वैश्विक स्तर पर जन–जागरूकता फैलाने का ऐसा प्रयास है जिसमें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सहयोग की अपेक्षा की जाती है। विश्व बंधुत्व की भावना के साथ इसमें भागीदारी सुनिश्चित करना धरती तथा पर्यावरण को बचाने में सार्थक प्रयास साबित हो सकता है।

प्रियंका सौरभ

वक्त–वक्त की बात

अभी बस दो साल पहले की ही बात है।कि शर्मा जी के पड़ोस में एक घर में चोरी हो गई थी।चोरी कोई बड़ी नहीं थी।केवल गुप्ता जी की काफी पुरानी कार चोरी हो गयी थी। शर्मा जी ने फिर भी पड़ोस वालों को समझाया।कि अपने मोहल्ले के दोनों तरफ लोहे के बड़े–बड़े गेट लगवा लेते हैं।जिससे चोरी की संभावना समाप्त हो जाएगी और एक गार्ड को ड्यूटी पर रख लेंगे।जिसे सब मिलकर महीने भर की तनखा दे दिया करेंगे। लेकिन शर्मा जी की बात सिर्फ गुप्ता जी को समझ में आई।जिनके घर में चोरी हुई थी।बाकी सभी लोगों का यह कहना था कि ऐसी घटना तो हो ही जाती हैं।इसके लिए पुलिस में रिपोर्ट करनी चाहिए।वही लोग चोरों को ढूंढ कर उन पर उचित कार्रवाई करेंगे।

वहीं कुछ लोगों का यह भी कहना था कि शर्मा जी हमारे मोहल्ले के इन 60 मकानों में गिने–चुने लोगों के पास की कार है।जिसके लिए केवल उन्हीं लोगों को सुरक्षा की जरूरत ज्यादा है जिनके पास कार है। अगर वो लोग चाहे तो मिलकर लोहे का गेट लगा ले और गार्ड भी रखें।लेकिन बाकी लोग अपनी कमाई से उन्हें पैसा क्यों दें।

खैर, आज 2 साल बाद कोरोना की महामारी के दौर में परिस्थितियां कुछ ऐसी बनी कि अब वही लोग इस बात की राय देने लगे कि चलो सबलोग मिलकर लोहे का दरवाजा दोनों तरफ लगवा ले और गार्ड भी रख लें।जिससे मोहल्ले के लोगों के अलावा बाहर का कोई भी व्यक्ति बिना जानकारी के अंदर ना आ सके। शर्मा जी इस बात को सुनकर मन ही मन मुस्कुराए।

उन्होंने सोचा कई बार जीवन में बदलाव कुछ इस तरह आते हैं।कि कुछ चीजें अपने आप लोगों को जरूरी लगने लगती है।जो किसी दूसरे समय मे उन्हें सही नही लगती। जीवन के हर पहलू में हर व्यक्ति की राय अलग अलग हो सकती हैं।एक बात जो कभी सभी के लिए गलत थी।वही बात जीवन के किसी दूसरे पहलू में सही भी लगने लगती है।

शर्मा जी मन ही मन मुस्कुराए और सभी लोगों को पैसे इकट्ठा करने का बात कही और सब लोगो ने मिलजुलकर इस दिशा में आगे कदम बढ़ाया।जो काम शायद दो साल पहले दो या तीन महीनों में होता।वही काम कोरोना काल में चार से पाँच दिनो में ही पूरा हो गया।

नीरज त्यागी
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश).

गीतिका छन्द

बोझ सीने में दबाकर,सब अकेले सह गए ।
कुछ कभी कहते किसी से ,खुद सिसकते रह गए ।
हाथ जीवन से छुड़ाया,मृत्यु को अपना लिया ।
हैं सभी हैरान तुमने, ये अचानक क्या किया ।।
आस का हर बंध तोड़ा,डोर जीवन तोड़कर ।
जिंदगी सस्ती नहीं थी,जो गए हो छोड़कर।
मुश्किलें हैं अंग जीवन का नहीं कोई सजा ।
जो करे संघर्ष जीवन में वही पाये मजा ।।
हा! भविष्यत का सुनहरे रह गया क्या अर्थ अब ।
बंद दरवाजे हुए अरु, हो गया है व्यर्थ सब ।
इक कहानी बन गयी है, इक कहानी को मिटा ।
छल चली है मृत्यु श्वासें, है कहीं कोई लुटा।।
घूंट पीकर खून के गल,फंद वह बुनता रहा ।
मृत्यु से पर पूर्व सौ –सौ,बार वो मरता रहा ।
जिंदगी बन रेत हाथों,से फिसलती है जहां ।
आत्महत्या की यकीनन, ख्वाहिशें पलती वहां ।।

रीना गोयल
सरस्वती नगर
हरियाणा

जीवन की चुनौतियां

जीवन की चुनौतियां
आती है बार बार
इसे स्वीकारो
तीक्षण वार करो
ऐसे ही नही आती जीवन में सफलता
रास्ते मे कंकरों से लड़ते हुए बढ़ते है
आदत सी बनाने होंगे
संघर्ष का रास्ता यूँही
आसान नही होती
पसीने के बुन्दे ही पहचान होती
मेहनत के बल को दोस्त बनाने होते।
रग रग में मुकाम को हासिल करने की तीव्रता होती
यू समझो प्राण हौ वह
इसे पाए बिना स्वाश न लो तुम
युही मुकाम आसान नही होती
आती है चुनैतिया बार बार
इसे स्वीकार करो तुम।
हौसला को बुलंद करके
गिर कर उठ कर चलना
खुद संभलना
जीवन की मुश्किल से लड़ना
संघर्ष की नाव
सफलता को किनारे लाना
जीवन की राह एक कतार है
एक एक करे कदम से कदम आगे बढाओ
जीवन की पाड़ लागयो

आलोक राय,
मेंहदी बगान,
पूर्ब बर्धमान

पूरा जो चुनाव हुआ, नेता जी को भाव हुआ,
नेता जी के दर्शन का भाग नहीं मिलता।
कहते हैं जनता के, सेवक हैं समता के,
हृदय में ऐसा अनुराग नहीं मिलता।
सेवा हेतु त्याग होना, धैर्य कभी नहीं खोना,
जिसका कि तुममें चि–राग नहीं दिखता।
वह भक्ति की शक्ति थी, मूर्ति स्वामिभक्ति थी,
पन्ना धाय जैसा अब, त्याग नहीं मिलता।।
मेंहदी की लाली वैसी, गजरा की थाली वैसी,
अभी–अभी राजा संग ब्याह कर आइ थीं।
देश प्रजा रक्षा हेतु, धर्म की सुरक्षा हेतु,
चुंडावत को शत्रु पे करनी चढ़ाइ थी।
मुगलों को रोक लिया, रानी मोह घेर लिया,
दूत भेज रानी से नि–शानी मंगवाइ थी।
कमजोर पड़े नहीं, वो दुश्मन बढ़े नहीं,
हाड़ा रानी सिर काट, उन्हें भिजवाइ थीं।
मन में हो छल द्वेष, उपरि चमक वेष,
ऐसे राम पद अनुराग नहीं मिलता।
स्वार्थ में हैं छाए हुए, अति सकुचाये हुए,
आगे बढ़ने का कोई मार्ग नहीं मिलता।
हुए सब छुई मुई, दुनिया बदल गई
पुहुपों को मधुपों का राग नहीं मिलता।
बिना माता–पिता सेवा, मिले नहीं कोई मेवा,
चार धाम यात्रा फलभाग नहीं मिलता।

नीरज कुमार द्विवेदी, बस्ती–उत्तरप्रदेश

कभी न हारे हैं जीवन में...

कभी न हारे हैं जीवन में, कभी न हम हारेंगे,
मुश्किल वक्त में हिम्मत से जीवन को सवारेंगे।
अगर नही हुए धनवान, पर बनना न मुझे बेईमान,
प्रभु ने जो दिया मुझे, खुश रह जीवन को निखारेंगे।।
सदवचन ही बोलेंगे, न करेंगे किसी से छल,
सत्पथ पर चलते रहने को लगाएँगे पूरा बल।
छोटे छोटे कर प्रयास, लिखेंगे एक नया इतिहास,
साहित्य सृजन में अब तो यह जीवन ही गुजारेंगे।।
न किसी से ईर्ष्या रखूँ, नहीं किसी से करता होड़,
सफलता पाने को जीवन में करता न मैं तोड़ मरोड़।
चलता न मैं कुटिल चाल, अभिलाषा न बनूँ मालामाल,
आत्मसम्मान को चोट लगे, न कोई प्रस्ताव स्वीकारेंगे।।
कठिन बहुत हालात भी हो सच का दामन न छोड़ेंगे,
आशा के दीप जले सदा, जीवन सद्कर्मों पर मोड़ेंगे।
न झुकने की मेरी आदत, प्रभु के आगे करूँ इबादत,
कड़े परिश्रम के बलबूते जीवन को सफल बनाएँगे।।
माना सच राह पर चलना होगा न बिल्कुल आसान,
पर सत्य पथ का अनुगमन देगा एक अलग पहचान।
कभी जीवन में होगी निराशा, न छोड़नी हमें है आशा,
कभी न हारे हैं जीवन में, निश्चित कभी न हम हारेंगे।।

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
बस्ती, उ.प्र.

ये 1962 का नहीं, 2020 का भारत है

चीन हो जाओ सावधान
ये 2020 का है हिंदुस्तान
बार– बार 1962 का राग
अलापने से कुछ
होने वाला नहीं है
यह 2020 का आधुनिक हिन्दुस्तान है
इस बार यदि तुम नहीं सुधोरोगे तो
इसका बदला 2020 में लेकर रहेंगे हम।
तुम्हारी गीदड़ भभकी से नहीं डरेगा हिन्दुस्तान,
यदि तुम हमें 1962 की याद दिलाते हो तो
उसे पहले तुम 1967 के युद्ध को याद कर लो।
अब तक तुम 1962 में
जी रहे हो तुम यह नया हिन्दुस्तान है
हम दोस्ती और दुश्मनी अच्छे से निभाना जानते हैं
छेरोगे तो छोड़ेंगे नहीं।
हर हिमाकत का मिलेगा जवाब
यह हिन्दुस्तान है किसी भी कीमत पर झुकने वाला नहीं है।
जो अपने दुश्मनों से बदला लेना बहखुबी जनता है। आज का भारत इतना शक्तिशाली है जो अपने दुश्मनों को करारा जवाब दे सकता है।
ये 1962 का नहीं, 2020 का भारत है।।

राज कुमार साव

कामयाबी के जुनून में अपनों को ना बिसराएं

परिवार केवल साथ रहने का नाम नहीं है। एक दूसरे की जरूरतों को समझने का नाम भी है। यदि आप के परिवार में कोई सदस्य अधिकतर समय अकेले रहता है और किसी से बात नहीं करता है। तब आप को उस पर ध्यान देने की जरूरत है।

वर्तमान समय में हमारे जीवन में टेक्नोलॉजी केवल एक प्रयोग की वस्तु नहीं है। हमारे जीवन का हिस्सा बन चुकी है। टेक्नोलॉजी के चलते मिलों दूर रहने वाले लोग भी एक दूसरे के पास आ चुके हैं। हम टेक्नोलॉजी के प्रयोग से कोषों की दूरी पर रहते हुए मिनटों में कहीं पर भी बात करने के साथ ही साथ वहां पर मौजूद लोगों को देख सकते हैं। विडियो कॉलिंग का अविष्कार केवल महाभारत की सोच को असल रूप देने की प्रक्रिया ही नहीं थी। मनुष्य के जीवन में बदलाव लाने का प्रयास भी है। लोगों के बीच दूरियां कम कर उन्हें एक दूसरे के करीब लाने का प्रयास है।

एक ओर जहां हम हर रोज तरक्की की नई मिसाल कायम कर रहें हैं। वहीं दूसरी ओर हम अपनों से दूर और तन्हा होते जा रहे हैं। हमारा काम और हमारी कामयाबी हमें अपनों से दूर करती जा रही है। हम अपनों से दूर कामयाबी के जुनून में इस तरह पागल होते हैं कि हम उसके अलावा कुछ सोचते नहीं है। जब हमें वह कामयाबी नहीं मिल पातीं जिसका हम लक्ष्य सोच कर अभी तक कार्य कर रहे थे, तब कई बार हम मानसिक तनाव का शिकार होते हैं। इसी प्रकार से हम अपने परिवार और समाज में सभी से अलग विचार रखने पर आलोचना के भागीदारी बनते हैं। जिसके चलते हम अपने जीवन में निराशा के शिकार होते हैं।

वर्तमान समय में मनुष्य जाति ने बहुत अधिक तरक्की हासिल कर ली है। किन्तु हम एक–दूसरे के करीब आने के स्थान पर एक दूसरे से दूर होते जा रहे हैं। बहुत से दोस्त होने के बाद भी हमारे जीवन में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं होता है, जिससे हम खूल कर बात करें। माता–पिता और अन्य परिवार जनों के साथ हम रहते हैं बातें भी करते हैं। किन्तु अक्सर हमारे समाज में एक दूरी भी होती है। जिसके चलते हम उनसे अपने दिल की बात नहीं कह पाते हैं। जिम्मेदारियों का एहसास हमें हमारे दिल की बात कहने का मौका नहीं देता है। ऐसे में अक्सर लोग इतने अकेले हो जातें हैं। कि असल दुनिया से बाहर सोशल वेबसाइट की दुनिया में अपने लिए एक ऐसा दोस्त खोजने लगते हैं, जिससे वह अपने दिल की बात कह सकें।

भारत में 120 करोड़ लोग मानसिक बीमारी के शिकार होते हैं। जिसमें से 5 करोड़ के लगभग लोग बहुत ही बूरी तरह से मानसिक तनाव से गुजर रहें हैं। किसी अन्य बीमारी से अधिक खतरनाक बीमारी हमारे देश में सालों से मौजूद हैं जिसके लिए हम कुछ नहीं कर रहे हैं। अपने आसपास लोगों को इस बीमारी का शिकार बनने में मदद कर रहे हैं, उन्हें अकेला छोड़ कर।

मानसिक तनाव के बहुत से कारण हो सकते हैं। किन्तु यह कोई डरने वाली बात नहीं है। यहां कोई शर्म या लजा की बात नहीं है। जिस प्रकार से हमारे शरीर को कोई समस्या होती है और हम उसके इलाज के लिए डॉक्टर के पास जातें हैं। उसी प्रकार से हमारे दिमाग भी अस्वस्थ महसूस करता है। तब भी हमें डॉक्टर के पास जाना चाहिए। यह कोई गलत फैसला नहीं है। यदि हम अपने इलाज के लिए किसी डॉक्टर के पास नहीं जातें हैं जरूरत होने पर भी, तब आने वाले समय में वह एक बड़ी समस्या बन सकतीं हैं। एक सर्वे के अनुसार महिलाओं से अधिक पुरूष मानसिक तनाव का शिकार होते हैं। जिसके चलते वह शराब–सिगरेट जैसे नशीले पदार्थों का सेवन करतें हैं।

हमारे देश में मानसिक तनाव को पागल पन से जोड़ कर देखा जाता है। आमतौर पर जिसकी वजह से लोग जब भी मानसिक रूप से परेशान होते हैं तब किसी से यह बात नहीं बतलाते हैं। जिसके कारण वह खुद की परेशानियों को बढ़ाते हैं और कई बार यह परेशानियां इतनी अधिक बढ़ जाती है। कि हम खुद को और साथ ही साथ अपने से जुड़े लोगों को नुक्सान पहुंचाते हैं।

हमारी युवा पीढ़ी मस्ती, हंसी–मजाक घूमने फिरने के शौकीन होते हैं। क्लब जाना पार्टी करना हर वक्त दोस्तों के साथ समय बिताते हैं। किन्तु जब यही दोस्त हमसे दूर होने लगते हैं और हम अकेले होते जाते हैं, तब हमें दुख होता है। ऐसे में हम किसी ऐसे के साथ की तलाश में होते हैं जिसके साथ हम अपना अकेलापन बांट सकें। अधिकतर बार ऐसी स्थिति में हम अपने परिवार के करीब आने के स्थान पर उनसे और अधिक दूर होते जाते हैं और हमारे देश में अधिकतर माता–पिता एवं परिवार के लोग इस बात पर ध्यान नहीं देते हैं। जिसके चलते धीरे–धीरे मानसिक तनाव बढ़ता है।

परिवार केवल साथ रहने का नाम नहीं है। एक दूसरे की जरूरतों को समझने का नाम भी है। यदि आप के परिवार में कोई सदस्य अधिकतर समय अकेले रहता है और किसी से बात नहीं करता है। तब आप को उस पर ध्यान देने की जरूरत है। आप बात करिए उससे पुछे क्या बात है जो वह किसी से बात नहीं करता है। उसे विश्वास दिलाएं कि आप उसके साथ है और वह जो भी बोलेंगे आप एक मित्र की तरह सुनेगे। हम उसकी बातों को सुन किसी प्रकार की धारण नहीं बनाएंगे। ताकि वह आप से अपनी बात कहें।

भारत में गरीबी बेरोजगारी जैसी बहुत सी समस्याएं हैं जिससे लोग जूझ रहे हैं। ऐसे में अकेलापन और अपनों का ही गलत व्यवहार आप को मानसिक रोगी बना सकता है।

इस लिए आप को चाहिए कि आप हर हाल में खुद का ध्यान रखें। यदि आप को किसी मदद की जरूरत है तो डॉक्टरों के पास जाएं। किसी सोशल वेबसाइट पर लोगों से बात कर आप की समस्या दूर नहीं हो सकती है। जीवन बहुत अनमोल है इसके महत्व को समझें। कोई भी गलत कदम उठाने से पहले केवल खुद की ख्वाहिशों को याद करो और उन लोगों के बारे में विचार करों जो आप से जुड़े हैं। किसी दर्द में मौत को गले लगाने से अच्छा है। आप खुद को अपने आने वाले कल के लिए, अपनों के साथ के लिए सुरक्षित र खें। जीवन सबसे अधिक महत्वपूर्ण है प्रत्येक व्यक्ति का। हमें कभी भी किसी के जीवन को मानसिक तनाव की बलि नहीं चढ़ने देना चाहिए। अपने बीच की दुरियों को दूर करें। सोशल वेबसाइट की दुनिया से बाहर आएं और असल दुनिया में अपने दोस्तों और परिवारजनों के साथ वक्त व्यतित करें। अपना और अपनों का ख्याल रखें। साथ रहने से जरूरी है साथ जुड़े रहिए। संस्कारों और रीति–रिवाजों से बाहर निकल कर कुछ समय के लिए छोटे बड़ों का भेदभाव मिटा कर अपनो की जरूरत समझें। उनको प्रेम और सु ख सुविधाओं के साथ अपना समय और सहयोग भी दें।

राखी सरोज

समाजिक और पारिवारिक जागरुकता रोक सकती है आत्महत्याएं

सुशांतसिंह यह नाम हर जुंबा पर है। शायद जो लोग उस प्रतिभा सम्पन्न लड़के को पहले नहीं जानते थे। वे भी आत्महत्या के बाद उसे जानने लगे। उसके काम की तारीफ करने लगे और आत्महत्या को घिनौना काम बताते हुए दार्शनिक अंदाज में आत्महत्या को कायराना हरकत बता कर अपने संवेदनशील होने का प्रमाण दे रहे है। धर्म शास्त्रों में आत्महत्या करने वाले को क्या कहा गया है। जो आत्महत्या करता है उसका क्या होता है। ये तमाम बातें अफसोस भरे शब्दों में लोग सोशल मीडिया पर और बातचीत में आपस में कर रहे है। संवेदना से भरे तमाम लोग बात तो सही कर रहे है तमाम बातें और जुमलें अब सुशांतसिंह के लिए किसी काम के नहीं है। लेकिन उन बातों को, तथ्यों को और स्थितियों को समझ कर हम थोड़ा भी ध्यान दे तो इनसे भविष्य में आत्महत्या करने वाले को रोका जा सकता है। सुशांत सिह का जीवन कैसा था, कितनी प्रतिभा उनमें थी, कम उम्र में ही किस ऊंचाई पर वो पहुंचे यह सब उनकी मौत के बाद तमाम टीवी चौनलों ने दिखाया और अपने अपने तर्क दे कर यह बताने की कोशिश की कि सुशांत सिंह ने अपनी जीवन लीला क्यों खत्म करी। हर आत्महत्या के बाद चर्चाओं का इतना नहीं होता। सब जगह चर्चा सुशांत सिंह की थी क्योंकि वे ग्लैमर की दुनिया में थे, पर वे चर्चाएँ अप्रत्यक्ष रूप से मनुष्य समाज के एक पुराने सवाल का जवाब दे रही थी। वो सवाल है–लोग क्यों आत्महत्या करते हैं?

सबसे ज्यादा आत्महत्याएं भारत में होती है

शायद ये पढ़कर आप चौंक जाएंगे कि विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने दुनियाभर में होने वाली आत्महत्याओं को लेकर एक रिपोर्ट जारी की है, जिसके मुताबिक दुनिया के तमाम देशों में हर साल लगभग आठ लाख लोग आत्महत्या करते हैं, जिनमें से लगभग 21 फीसदी आत्महत्याएं भारत में होती है। यानी दुनिया की सबसे ज्यादा आत्महत्याएं भारत में होती है। देश में शायद ही कोई दिन ऐसा बीतता हो जब देश के किसी न किसी इलाके से गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, कर्ज जैसी तमाम आर्थिक तथा अन्यान्य सामाजिक परेशानियों से परेशान लोगों के आत्महत्या करने की खबरें न आती हों।

रिपोर्ट का एक चौंकाने वाला तथ्य यह भी है कि भारत में आत्महत्या करने वालों में बड़ी तादाद युवाओं की है, यानी जो उम्र उत्साह से लबरेज होने और सपने देखने की होती है उसी उम्र में लोग जीवन से पलायन कर जाते हैं। इस भयानक वास्तविकता की एक बड़ी वजह यह है कि पिछले कुछ दशकों में लोगों की उम्मीदें और अपेक्षाएं तेजी से बढ़ी हैं, लेकिन उसके सामने अवसर उतने नहीं बढ़े। दरअसल, उम्मीदों और यथार्थ के बीच बड़ा फर्क होता है। यही फर्क अक्सर आदमी को घोर अवसाद और निराशा की ओर ले जाता है। नवउदारीकृत अर्थव्यवस्था ने हमारे सामाजिक और पारिवारिक ढांचे को जिस तरह चोट पहुंचाई है उससे देश में आत्महत्या की बीमारी ने मह. ामारी का रूप ले लिया है। ऐसा नहीं है कि लोग आत्महत्या सिर्फ आर्थिक परेशानियों के चलते ही करते हों, अन्य सामाजिक कारणों से भी लोग अपनी जान दे देते हैं।

आत्महत्या करने वालों की मनोस्थितियां

दुनिया की एक बड़ी आबादी कभी न कभी आत्महत्या करने के बारे में सोच चुकी होती है। कुछ लोगों में आत्महत्या करने के विचार बड़े तीव्र होते हैं और लंबे समय तक बने रहते है, तो कुछ में ऐसे विचार क्षणिक होते हैं। कुछ समय बाद उन्हें हैरानी होती है कि आखि़र वे ऐसा कैसे सोच सकते हैं। हालांकि आप किसी को देखकर तो यह नहीं बता सकते कि इस व्यक्ति के मन में क्या चल रहा है इसलिए आमतौर पर आत्महत्या करने वालों के मनोस्थिती की पहचान नहीं कर सकते। लेकिन कुछ मनोवैज्ञानिक बाहरी लक्षण हैं, जो आत्महत्या करने की मनोस्थिति के बारे में थोड़ा–बहुत आइडिया दे देते हैं जिनके मन में लगातार नकारात्मक विचार चलते रहते हैं उनका आत्मविश्वास कम हो जाता है। वे अपने मनोभावों को व्यक्त करने नहीं कर पा रहे हो। उनकी खानपान की आदतों में अचानक बड़ा बदलाव देखने मिलता है। ये लोग अपने शारीरिक स्थिती को लेकर उदासीन हो जाते हैं। उन्हें फर्क नहीं पड़ता कि वे कैसे दिख रहे हैं। एक महत्वपूर्ण बात जो आत्महत्या की प्रवृत्ति वालों में देखी जाती है वह यह कि वे लोगों से कटने लगते हैं। सामाजिक और पारिवारिक लोगों से वे दुरियां बनाने लगते है और खुद को नुकसान पहुंचा सकते हैं। आमतौर पर जिन लोगों में खुद को समाप्त करने की भावना आती है, उनका सोचना होता है कि जिंदा रहने का कोई मतलब नहीं है। उन्हें जीवन दुख से भरा लगता है। वे खुद को बेकार मानते हैं। धीरे–धीरे उन्हें लगने लगता है कि उनके आसपास के लोग उन्हें पसंद नहीं करते है। कोई उनसे प्यार नहीं करता है। वे महत्वहीन हैं। लोग उनके बिना बेहतर रह सकते हैं। ऐसे लोग एकाकी होने लगते है और अपनी और अपनों की जिंदगी की बेहतरी का रास्ता अपने जीवन की समाप्ति में ही दे खते हैं। कभी–कभी लोग क्रोध, निराशा और शर्मिंदगी से भरकर ऐसा क़दम उठाते हैं। चूंकि उनकी मनोस्थिति स्थिर नहीं होती अतरू ये विचार उनमें आते–जाते रहते हैं। कभी वे बिल्कुल अच्छे से रहने लगते हैं और कभी फिर से अवसाद में चले जाते हैं।

आत्महत्या को प्रेरित करती परिस्थितियां

यह बता पाना संभव नहीं है कि कौन–सा व्यक्ति किस बात को लेकर इतना बड़ा कदम उठा सकता है। पर कुछ परिस्थितियां आत्महत्या को लेकर व्यक्ति को उस ओर प्रेरित करती है। जिन लोगों को जीवन में असफलता का सामना करना पड़ता है वे दुनिया का सामना करने से डरते हैं और आत्महत्या की ओर कदम बढ़ाते हैं। जिन लोगों के परिवार या दोस्तों में किसी ने आत्महत्या का रास्ता अपनाया होता है वे भी यह राह चुनने को प्रेरित होते हैं। जो लोग असल जिंदगी में लोगों से मि. लने–जुलने के बजाय आभासी दुनिया यानी वर्चुअल वर्ल्ड में अधिक समय बिताते हैं, वे भी इस मानसिकता से गुजरते हैं। आभासी दुनिया का असर खतरनाक हो सकता है। जो लोग समाज द्वारा ठुकरा दिए गए होते हैं, उनमें भी खुद को खत्म करने की प्रवृत्ति होती है। जिन लोगों को कोई असाध्य बीमारी हो जाती है, वे भी निराशा के दौर में यह कदम उठा लेते हैं। शराब और ड्रग्स जैसे नशे के आदी लोग भी आत्महत्या करने की दृ ष्टि से काफी संवेदनशील होते हैं। कभी–कभी आर्थिक और भावनात्मक क्षति भी लोगों को इस मुकाम तक पहुंचा देती है।

समाज और परिवार की जिम्मेदारी

आत्महत्या की बढ़ती प्रवृत्ति एक तरह से सामाजिक दुष्टिना है। आज व्यक्ति अपने जीवन की कड़वी सच्चाइयों से मुंह चुरा रहा है और अपने को हताशा और असंतोष से भर रहा है। आत्महत्या का समाजशास्त्र बताता है कि व्यक्ति में हताशा की शुरुआत तनाव से होती है जो उसे खुदकुशी तक ले जाती है। आज इंसान के चारों तरफ भीड़ तो बहुत बढ़ गई है लेकिन इस भीड़ में व्यक्ति बिल्कुल अकेला खड़ा है। हम जिस समाज में रहते है उसमे अगर अचानक या धीरे–धीरे किसी पारिवारिक सदस्य, मित्र में इस तरह के बदलाव दिखते है तो हमें सचेत हो कर उसे भावनात्मक सहारा देना चाहिए। ताकि वो अवसाद की खाई से बाहर निकलकर सोच सके। नकारात्मक सोच को बाहर निकालने का रास्ता दि खाएं। उन लोगों की पहचान करें, जिनसे मिलकर, जिनसे बात कर वो नेगेटिव फील करने लगते हो। ऐसे लोगों को उनकी जिंदगी से दूर करे। उन लोगों बीच र खें जो उनको हंसाते हों।आपको अच्छा महसूस कराते हों। आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हों। अस्त–व्यस्त जिंदगी और गलत जीवनशैली पर कुछ टीका टिप्पणी करने के बजाए उनको प्रेम से व्यवस्थित रहने, खाने–पीने के लिए उत्साह जगाए। नियमित रूप से कुछ समय उनके साथ व्यायाम या योग करते हुए बिताएं। साथ ही ध्यान और मैडिटेशन करवाए जिससे मानसिक स्थिती में भी एक चमत्कारिक लाभ होता है।

सबसे अहम् बात ऐसे लोगों को अकेले तो भूलकर भी न रहने दे। परिजन या दोस्त संग रहे। उनके संग यात्रा करे। नई जगह पर जाने से थोड़ा तरोताजा महसूस करेंगे। सकारात्मक कहानियां और प्रेरक बातें पढ़वाए। यदि आप किसी परिचित से अपने इन मनोभावों को व्यक्त करने में झिझक रहे हों तो किसी मनोचिकित्सक से मिलें। याद रखें, जिंदगी से ज़्यादा महत्वपूर्ण कुछ और नहीं होता। हमारे यहॉ मानसिक स्वास्थ्य को लेकर कम ध्यान दिया जाता है और पूरी दुनिया में मानसिक रूप से सेहतमंद बने रहने के लिए कोई योजना नहीं है। जो चिंता का विषय है। भारत जैसे पारंपरिक रूप से मजबूत तथा परिवार के भावनात्मक ताने–बाने से युक्त धार्मिक और आध्यात्मिक देश में भी खुदकुशी की चाह लोगों में जीवन जीने के अदम्य साहस को कमजोर कर रही है। जबकि विश्व में भारतीयों के बारे में कहा जाता है कि हर विपरीत से विपरीत स्थितियों में जीवित रहने का हुनर इनके स्वभाव और संस्कार में है और इसी वजह से भारतीय सभ्यता और संस्कृति सदियों से तमाम आघातों को सहते हुए कायम है। यदी कोई आपका अपना जीवन से टूट रहा है तो उसे सम्हालें। उसकी मानसिक स्थिती को बदलने का हर संभव प्रयास करे। उसे मानसिक संबल दे ताकि भविष्य में कोई सुशांत सिंह जैसी प्रतिभा, कोई विद्यार्थी, कोई मजदूर या किसान इस दुस्साहस की ओर कदम न बढ़ाए। और हम फिर वही प्रश्न न दोहराए।

संदीप सृजन

घूँघट की बगावत

गोरखपुर, रविवार, 21 जून 2020

www.ghoonghatkibagawat.com

6

भुखमरी के कगार पर हैं मिट्टी का बर्तन बनाकर पेट पालने वाले कुम्हार

कोरोना के चलते हुए लॉकडाउन ने मिट्टी बर्तन बनाने वाले कारीगरों के सपनों को भी चकनाचूर कर दिया है। इन्होने मिट्टी बर्तन बनाकर रखे लेकिन बिक्री न होने की वजह से खाने के भी लाले पड़ गए हैं। लेकिन अब न तो चाक चल रहा है और न ही दुकानें खुल रही हैं। घर व चाक पर बिक्री के लिए पड़े मिट्टी के बर्तनों की रखवाली और करनी पड़ रही है। देश भर में प्रजापति समाज के लोग मिट्टी के बर्तन बनाने का काम करते हैं।

कोरोना की वजह से हुए लॉकडाउन ने इनकी उम्मीदों पर पानी फेर दिया है। उनके बर्तनों की बिक्री नहीं हो रही है। महीनों की मेहनत घर के बाहर रखी है। इन हालात में परिवार का गुजारा करना भी मुश्किल हो गया है। गर्मी के सीजन को देखते हुए बर्तन बनाने वालों ने बड़ी संख्या में मटके बनाए। डिजाइनर टोंटी लगे मटकों के साथ छोटी मटकी और गुल्लक, गमले भी तैयार किए। दरअसल आज भी ऐसे लोग हैं जो मटके के पानी को प्राथमिकता देते हैं। मगर इस बार तो इनको घाटा हो गया। परिवार कैसे चलेगा। कोई भी मटके खरीदने नहीं आ रहा है। धंधे से जुड़े लोगों ने ठेले पर रखकर मटके बेचने भी बंद कर दिए हैं।

मिट्टी के बर्तनों के जरिए अपनी आजीविका कमाने वाले कुशल श्रमिकों के लिए उत्तर प्रदेश के मु ख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की पहल से देश भर के प्रजापति समाज के लोगों के लिए एक आस जगी है, जिसके अनुसार राज्य के प्रत्येक प्रभाग में एक माइक्रो माटी कला कॉमन फैसिलिटी सेंटर (सीएफसी) का गठन किया जाएगा। । सीएफसी की लागत 12.5 लाख रुपये होगी, जिसमें सरकार का योगदान 10 लाख रुपये होगा। शेष राशि समाज या संबंधित संस्था को वहन करनी होगी। भूमि, यदि संस्था या समाज के पास उपलब्ध नहीं है, तो ग्राम सभा द्वारा प्रदान की जाएगी। प्रत्येक केंद्र में गैस चालित भट्टियां, पगमिल, बिजली के बर्तनों की चक और पृथ्वी में मिट्टी को संसाधित करने के लिए अन्य उपकरण होंगे। श्रमिकों को एक छत के नीचे अपने उत्पादों को विकसित करने के लिए सभी सुविधाएं होंगी। इन केंद्रों के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों को रोजगार उपलब्ध कराया जायेगा।

खादी और ग्रामोद्योग का ये बहुत अच्छा प्रयास है, यदि उत्पाद गुणवत्ता के हैं और उनकी कीमतें उचित हैं, तो बाजार में उनके लिए अच्छी मांग होगी। इससे व्यापार से जुड़े लोगों के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। इसके अलावा, तालाबों से मिट्टी उठाने से बाद की जल–संग्रहण क्षमता बढ़ जाएगी। इन उत्पादों को पॉलीथिन का विकल्प बनने से पॉलीथीन संदूषण को भी रोका जा सकेगा। कोरोनावायरस के प्रसार को रोकने के लिए किए गए लॉकडाउन से लगभग हर क्षेत्र में कामकाज बिल्कुल ठप पड़ा है. केंद्र सरकार छोटे, मझोले और कुटीर उद्योगों के लिए स्पेशल पैकेज की घोषणा करके उनको जीवित रखने का प्रयास भले कर रही है। लेकिन, अस्पष्टता और सही दिशा–निर्देश के अभाव में बहुत राहत मिलती नहीं दिख रही है. देश में बहुत से ऐसे वर्ग हैं जिनका पुस्तैनी धंधा रहा है और कई जातियां ऐसी भी है जो विशेष तरह का काम करके अपना जीवन–यापन करते हैं। जैसे–माली, लोहार, कुम्हार, दूध बेचने वाले ग्वाला, दर्जी, बढ़ई, नाई, पत्तल–दोने का काम करके जीवन–यापन करने वाले मुशहर जाति के लोग. ये ऐसे लोग हैं जिनका कामकाज लॉकडाउन से सबसे अधिक प्रभावित हुआ है। सरकार ने बड़े कारोबारियों, मझोले कारोबारियों के लिए तो काफी कुछ दे दिया है, लेकिन उपर्युक्त लोगों के लिए सरकार की तरफ से कोई विशेष राहत का ऐलान नहीं किया गया है।

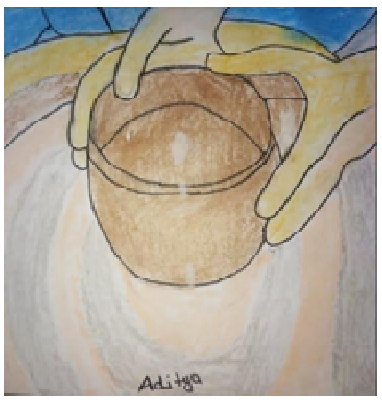

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश को संबोधित करते हुए आत्म निर्भर भारत बनाने पर जो दिए. उन्होंने देश को आगे बढ़ाने के लिए एमएसएमई को फौरी तौर पर राहत की घ ोषणा की. लेकिन, बजट का निर्धारण को वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण पर छोड़ दिया. साथ ही उन्होंने लोकल के प्रति वोकल होने की बात जरूर की लेकिन इस बात का जिक्र नहीं किया कि लॉकडाउन से प्रभावित होने वाले ऐसे लोगों के बारे में जिक्र नहीं किया जिनकी रोजी–रोटी खुद के कारोबार और हुनर पर निर्भर है। लॉकडाउन से उनके ऊपर गहरा असर हुआ है। ऐसे लोगों के पास बचत भी बहुत अधिक नहीं होती है कि वह अपनी जमा पूंजी खर्च करके घर का खर्च चला सके। ऐसे लोग हर रोज कमाते हैं, जिससे उनके खाने का इंतजाम हो पाता है। अब लॉकडाउन हो जाने से उनका कामकाज बिल्कुल बंद हो गया है। ऐसे में सरकार को इन लोगों के लिए कुछ न कुछ अलग से उपाय करना चाहिए. ताकि उनका जीवन भी सुचारु रूप से चल सके।

आज जब भारत के गांव बदलाव के दौर से गुजर रहे हैं ऐसे में गांवों में चल रहे परंपरागत व्यवसायों को भी नया रूप देने की जरूरत है। गुजरात के राजकोट निवासी मनसुख भाई ने कुछ ऐसा ही नया करने का बीड़ा उठाया है। पेशे से कुम्हार मनसुख ने अपने हुनर और इनोवेटिव आइडिया का इस्तेमाल करके न सिर्फ अच्छा बिजनेस स्थापित किया, बल्कि नेशनल अवार्ड भी हासिल किया। आज उनके नाम और काम की तारीफ भारत ही नहीं पूरी दुनिया में हो रही है। उनके मिट्टी के बर्तन विदेशों में भी बिक रहे हैं। पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने उन्हें 'ग्रामीण भारत का सच्चा वैज्ञानिक' कहा। राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने उन्हें सम्मानित करते हुए कहा कि ग्रामीण भारत के विकास के लिए उनके जैसे साहसी और नवप्रयोगी लोगों की जरूरत है। आज वे उद्यमियों के लिए एक मिसाल हैं।

कुछ लोग गांवों के परंपरागत व्यवसाय के खत्म होने की बात करते हैं, जो गलत है। अभी भी हम ग्रामीण व्यवसाय को जिंदा रख सकते हैं बस उसमें थोड़ी–सी तब्दीली करने की जरूरत है। भारत के गांव अब नई तकनीक और नई सुविधाओं से लैस हो गए हैं। भारत के गांव बदल रहे हैं, इसलिए अपने कारोबार में थोड़ा–सा बदलाव करने की जरूरत है। नई सोच और नए प्रयोग के जरिए ग्रामीण कारोबार को बरकरार रखा जा सकता है और उसके जरिए अपनी जीविका चलाई जा सकती है।

जब हम गांव में कोई कारोबार शुरू करते हैं, उससे सिर्फ हमें ही फायदा नहीं मिलता बल्कि हमारी सामाजिक जिम्मेदारी भी पूरी होती है। हम खुद आत्म. निर्भर बनते हैं और तमाम बेरोजगारों को रोजगार देते हैं। हर व्यक्ति की यह जिम्मेदारी बनती है कि वह अपने साथ ही दूसरे लोगों को भी प्रोत्साहित करे। उन्हें काम करने के प्रति जागरूक करे। इसी से ग्रामीण भारत के सशक्तिकरण का सपना पूरा होगा।

डॉ. सत्यवान सौरभ,

हरियाली फैलायें

चलो चले जी हम सब मिलकर,
वसुंधरा पर हरियाली फैलाते हैं।
हर गांव,हर खेत–खलिहान में,
मिल–जुलकर पेड़–पौधे लगाते हैं।
खेतों लगाएंगे फलों के बगीचे,
घर–घर को फूलों से महकाते हैं।
सड़कों को छायादार पौधे से,
कार्यालयों को फूलों से सजाते हैं।
घर आंगन हो तुलसी पुदीना,
छत–मुंडेर पर एलोवेरा उगाते हैं।
दादाजी लगाए थे आम के पौधे,
जिसे बच्चे तोड़–तोड़कर खाते हैं।
दादी लगाई थीं आंवला के पौधे,
हम आज आचार–मुरब्बा खाते हैं।
बाबुजी लगाए कई बरगद–पीपल,
जिनके नीचे बैठ राहगीर सुस्ताते हैं।
माताजी लगाईं आंगन में तुलसी,
आगंतुक को तुलसी चाय पिलाते हैं।
बहन लगाई है कई मेहंदी–एलोवेरा,
मां–बहनों को सजने के काम आते हैं।
भईया लगाये हैं कई पेड़ नीम–बबूल ,
जिससे हम सब दांतो को चमकाते हैं।
मैंने लगाया है कई अमरूद व नींबू,
जिसे बांट–बांट कर हमलोग खाते हैं।
बच्चे लगाएं रंग–बिरंगे फूल के पौधे,
जिससे गुलदस्ता और माला बनाते हैं।
चलो चलें जी हम सब मिलकर
वसुंधरा पर हरियाली फैलाते हैं।

गोपेंद्र कु सिन्हा गौतम

नौकरी

हाय रे हाय
नौकरी
आज की यह
कैसी विडंबना है
जिसके पास
नौकरी है
वह पढ़ा–लिखा
और सभ्य इंसान
समझा जाता है
और जिसके पास नहीं है
वह अशिक्षित और असभ्य
इंसान समझा जाता है
हाय रे हाय नौकरी।।
आज की यह कैसी
विडंबना है
जिसके पास
नौकरी है
उसका
समाज में
बहुत अधिक सम्मान
किया जाता है
और जिसके पास
नहीं है उसका
तिरस्कार
किया जाता है
हाय रे हाय नौकरी।।

राज कुमार साव
बादशाही रोड
माठ पारा बर्धमान

तीन दिग्गज पुत्र नये बिहार के कर्णधार

बिहार की राजनीति आने वाले समय में इन तीनो दिग्गज के इर्द गिर्द घूमेगी ऐसा समझा जा सकता है। बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव, लोकजनशक्ति पार्टी के वर्तमान सांसद चिराग पासवान और बिहार के पूर्व मंत्री नीतीश मिश्र तीन ऐसे महारथी इस 2020 चुनाव के केन्द्र विन्दु में रहेंगे इससे इनकार नही किया जा सकता।

तीन दिग्गज पुत्र जिन्हें विरासत स्वरूप राजनीति मिली है।नये बिहार के कर्णधार बनने की दम रखते हैं ।इन तीनो के लिए 2020 का यह चुनाव वेहद अहम होगा जो बिहार की दशा दिशा तय करने वाला साबित हो सकता है।

इन तीनो के पास अब राजनीतिक अनुभव के साथ परिपक्वता और विजन है साथ ही साथ इनके पास अपनी अपनी जाति की नेतृत्व करने की क्षमता। बिहार की राजनीति आने वाले समय में इन तीनो दिग्गज के इर्द गिर्द घूमेगी ऐसा समझा जा सकता है।

बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव, लोकजनशक्ति पार्टी के वर्तमान सांसद चिराग पासवान और बिहार के पूर्व मंत्री नीतीश मिश्र तीन ऐसे महारथी इस 2020 चुनाव के केन्द्र विन्दु में रहेंगे इससे इनकार नही किया जा सकता।जिनके कंधे पर अपनी जाति के साथ युवा पीढ़ी के लिए बहुत कुछ देने करने की मादा है और जनता के लिए नई उम्मीद भी। तेजस्वी ने जहाँ एक ओर रोजगार यात्रा निकाल कर वेरोजगारों को लुभाने का भरसक प्रयास किया है वही आज भी वह सभी पार्टीयों को सीधे टक्कर देती नजर आ रही है।कोई भी उमीदवार हो उसकी टक्कर में राजद ही होगा।क्योंकि एक परंपरागत वोट राजद की आज भी उसके साथ खडी नजर आ रही है। वही चिराग पासवान ने बिहार फर्स्ट बिहारी फर्स्ट की यात्रा कर अपनी इच्छा जाहिर की है कि बिहारी के लिए वे कुछ करना चाहते है जिसका मौका लोगों को देना चाहिए आने वाला समय बिहार का हो बिहारी का हो जिसके लिए वे विजन की तैयारी भरसक करते रहेंगे। ऐसे संदेशो से जनता में सकारात्मक प्रभाव छोड़ा गया है जिस पर मंथन तो होगा ही ऐसा प्रतीत होता है।

वही मिथिलांचल का एक युवा नेतृत्व भाजपा उपाध्यक्ष नीतिश मिश्र की खामोश निगाहें इन सभी बातों का अध्ययन कर अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए जनता के बीच एक नेक, योग्य परिपक्व छवि बनाते हुए आगे बढ़ रहे हैं जो एक मात्र चेहरा हैं जिस पर अगडी जाति का नेतृत्व भाजपा अपने लिए ट्रंप कार्ड के तौर पर इस्तेमाल करना चाहेगी ऐसा माना जा सकता है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि बिहार के केन्द्र में युवा नेतृत्व की तिकड़ी है जो आने वाले समय में नेतृत्व करती नजर आने वाली है जिसका विजन और नेतृत्व परिपक्व होगा वो बाजी मार सकता है लेकिन तिकडी तो वजूद में आ चुकी है जिसको बूढी हो चुकि राजनीतिक निगाहें भलीभाँति समझ रहे हैं।

आशुतोष
पटना बिहार

किसे .....चुनें

जिंदगी अगर खुद को चुनती।
फिर वो मौत का फंदा ना बुनती।
जिंदगी अगर खुद को चुनती।
दूसरों पर रखी ,
उम्मीद जब है थमती ।।
खुद को हार कर,
जिंदगी की आस जब है जमती।।
जिंदगी अगर खुद को चुनती।
फिर वो मौत का फंदा ना बुनती।।
जिंदगी अगर खुद को चुनती।
कर खुद पर भरोसा ,
जब तक,
सांसों की डोर है चलती।।
साथ अपने हिम्मत से,
हर बात है बनती ।
मुश्किलें दौर भी,
आकर चला जाएगा।
बदल अपनी सोच ,
सब कर है सकती ।।
खुद से जो फिर हार गया,
अपने सामने ही,
हथियार डाल गया।
मौत उसे है चुगती।।
जिंदगी जब खुद को चुनती।
फिर वो,
जिंदगी की कहानियां ही बुनती।।

प्रीति शर्मा 'असीम'
नालागढ़ हिमाचल प्रदेश

वन्यजीवों की कठोर होती जिंदगी

भारत दुनिया के शीर्ष 17 मेगा–विविध देशों में से है। यह शेर, बाघ, तेंदुए और भूरे भालू जैसे बड़े शिकारियों से लेकर हाथियों और गैंडों जैसे बड़े शिकारियों तक, दुनिया की लगभग 8: दर्ज प्रजातियों का घर है। यह समृद्ध जीव न केवल भारत के पर्यावरण इतिहास का एक अभिन्न अंग रहा है, बल्कि कई देशी संस्कृतियों और परंपराओं को आकार देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। हालांकि, दशकों में, प्रकृति के साथ यह अंतरंग संबंध तेजी से मिट गया है।

1990 के दशक तक, भारत में एक संकट मंडरा रहा था और यह धीरे–धीरे स्पष्ट हो गया कि जंगलों और प्राकृतिक आवास का यह भयावह रूप से नुकसान हमारे अपने पड़ोस में हो रहा था। हमारे शहरी केंद्रों के पास कंक्रीट के जंगल के साथ जंगलों के प्रतिस्थापन का मतलब था कि वन्यजीवों के पास लोगों और उनके खेतों में जाने के लिए कोई जगह नहीं थी।

1995 तक, तेजी से विकसित होने वाली दिल्ली में आवासीय कॉलोनियों में दिखने वाले गीदड़ों, सांपों और जीवों की निगरानी, बचाव और पुनर्वास की आवश्यकता महसूस की जाने लगी। तेजी से प्रतिक्रिया करने वाली इकाई के साथ–साथ लोगों में जागरूकता और जागृति पैदा करने का एक बड़ा कार्यान्वन किए जाने की तरफ स्पष्ट रूप में कई मिशन सामने आने लगे थे जो प्रकृति के साथ मनुष्य की आधारभूत संरचना को मजबूत करने की वकालत कर रहे थे।

अफसोस की बात है कि 25 साल से अधिक समय के बाद, अपरिहार्य सत्य यह है कि हमारे शहरों का विस्तार जारी रहेगा और विस्थापित जानवरों को भोजन और पानी की तलाश में मानव–निवास स्थानों में आने के लिए मजबूर किया जाएगा।

खानाबदोश कलंदर समुदाय के लोग इस काम में शामिल होते हैं। उनके द्वारा भालू के साथ अमानवीय व्यवहार संरक्षण आपदा को रोकने के लिए हमें तेजी से काम करने की तरफ उकसाता है।

इसने हमें एक ऐसे दृश्य की ओर अग्रसर किया जो वास्तव में परेशान करने वाला थारू स्लॉथ बियर, जो गहरे जंगल का शर्मीला प्राणी माना जाता था, पर्यटकों को मनोरंजन करने के लिए राजमार्गों और प्रदूषित शहर की सड़कों पर घ ासीटा जाने लगा था।

एक अध्ययन से पता चलता है खानाबदोश कलंदर समुदाय के लोग इस काम में शामिल होते हैं। उनके द्व ारा भालू के साथ अमानवीय व्यवहार संरक्षण आपदा को रोकने के लिए हमें तेजी से काम करने की तरफ उकसाता है।

कलंदर समुदाय के समय–सम्मानित अभ्यास को श्डांसिंग बियर बनानेश के लिए छह महीने पुराने भालू शावक के थूथन के माध्यम से लाल–गर्म पोकर ड्राइविंग के साथ शुरू किया जाता है। एक मोटी रस्सी को फिर भेदी के माध्यम से जोर दिया जाता है। इस रस्सी में बँध ा भालू दर्द में ऊपर और नीचे कूदने लगता है। और देखने वालों को प्रतीत होता है कि भालू खुशी में नृत्य कर रहा है।

कलंदरों ने 400 वर्षों तक नृत्य करने वाले भालू को रखा है और उनके पास यह एकमात्र तरीका था जिससे वे अपने परिवार का पेट पालते थे। इन भालुओं को बचाने के लिए – अंततः, शावकों के अवैध शिकार को रोकना होगा और कलंदर को समाधान के केंद्र में रखना होगा।

और अमूमन यही दशा भारत के जंगलों में निवास कर रहे हाथियों की भी है। यह देखते हुए कि वे देश की संस्कृति और परंपरा में एक विशेष स्थान का आनंद लेते हैं, कोई भी यह मान सकता है कि हमारे हाथी उच्च स्तर की सुरक्षा का आनंद लेते हैं। दुर्भाग्य से, जमीन पर स्थिति एक पूरी तरह से अलग तस्वीर नजर आती है।

सिर्फ 22,000 से 25,000 जंगली हाथी भारत के जंगलों में रहते हैं। एक सदी पहले देश में मिलियन जंगली हाथियों की तुलना में वे अल्प संख्या में हैं। उनकी आबादी में शून्य के बावजूद, भारत दुनिया के लगभग 60: एशियाई हाथियों का घर है, जो इसे एक प्रजाति का आखिरी गढ़ बनाते हैं, जो कई प्रकार के खतरों का सामना करते हैं, उनमें से प्रमुख कारण हैं – वन क्षेत्र, निवास स्थान विनाश, अवैध शिकार और कैद।

अधिकांश पर्यटक उस क्रूरता से अनभिज्ञ हैं जो एक अप्रशिक्षित 'हाथी का सामना करता है। यह ठीक उसी क्षण से शुरू होता है जब इसे अपनी मां की सुरक्षा से छीन लिया जाता है, जिसके बाद बछड़े को एक तंग जाल में रखा जाता है, जहां इसे हफ्तों तक भूखा रखा है और पीटा जाता है। बछड़े की जंगली आत्मा के टूटने तक दयाहीन हमले एक दैनिक दिनचर्या है।

एनिमल वेलफेयर बोर्ड ऑफ इंडिया ने 2018 में राजस्थान के जयपुर में आमेर फोर्ट में हाथियों की सवारी करने के लिए मजबूर हाथी की विकट परिस्थितियों के बारे में एक चौंकाने वाली रिपोर्ट प्रकाशित की। अधिकांश हाथियों को लंगड़ा, अंधा और तत्काल चिकित्सा ध्यान देने की आवश्यकता थी। हमें इन शानदार जानवरों को बचाने के तरीकों के बारे में सोचना चाहिए। जैसे–जैसे हमारी भौतिक दुनिया तेजी से बदलती है, हमारे बीच के जानवरों के साथ हमारे संबंधों का पोषण करना बहुत ही महत्वपूर्ण है। एक स्वस्थ, संपन्न जैव विविधता भारत और दुनिया के अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है।

सलिल सरोज

घूँघट की बगावत

गोरखपुर, रविवार, 21 जून 2020

www.ghoonghatkibagawat.com

सुशांत जैसी शख्सियत का यूँ जाना अखरता है मानव जाति को

चिट्ठी ना कोई संदेश, इस दिल को लगा के ठेस कहाँ तुम चले गए. ...? हर दिल अजीज, उम्दा अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत सर आज आप हमारे बीच नहीं हैं खबर सुनने के बाद ना जाने कितनी बार मेरी आँख नम हुई गला रुंध सा गया ! मेरी मनरू स्थिति कुछ भी लिखने की नही है लेकिन आपकी इस आत्महत्या ने मानव जाति के लिए जो सवाल छोड़ें हैं उसको लिखना भी जरूरी लग रहा है! एक पूरा जीवन जो इस ध ारा पर आने में सतरंगे सपनों से लेकर नौ माह का खूबसूरत समय लेता है,अचानक ऐसी समस्याओं का अंत हो जाएगा या समस्याएं सुलझ जाएंगी? गरुड़ पुराण में आत्महत्या को पाप माना गया है और असमय प्रकृति के नियम को तोड़ना पाप के दायरे में आता ही है! आ खर कौन सी कमी थी आपकी जिंदगी में सुशांत सर जिस कमी को आप पूरा ना कर सके और असमय काल के गाल में समाहित होना आपको जायज लगने लगा? एक पल के लिए ठहर कर नही सोचा आपने अपने माता –पिता, भाई बहन परिवार दोस्त और हम जैसे लाखों दर्शकों के बारे में? आपका यूँ रुखसत होना मानव जाति के लिए यह प्रश्न खड़ा कर रहा है कि आत्महत्याओं के बढ़ते कौन सी विवशता, लाचारी,दुख,दर्द इंसान को घेर लेता है कि जिंदगी जीने से ज्यादा मौत प्रिय लगने लगती है! हर कोई सवाली है इस वक्त कि आ खरकार ऐसी क्या पीड़ा ऐसी कौन सी मानसिक विचलन मन में रही होगी कि सुशांत सिंह राजपूत जैसी शख्सियत ने मौत को गले लगाया? क्यों अचानक अपनों को रोता विलखता छोड़ कर इंसान चल देता है अज्ञात में सुख खोजने! यह कहीं लि खा तो नहीं कि मौत को गले लगा लेने के बाद सारी आंकड़ों से निकलती आह को अनसुना नही किया जा सकता! यदि हमारे आसपास कोई भी व्यक्ति हताशा महसूस कर रहा है,हीनता महसूस कर रहा है अथवा वो बातचीत के दौरान जिंदगी से ऊब जाने की बात करता है तो हमें उसकी बातों को गंभीरता से लेने की जरूरत है! हमारी पहली प्रतिक्रिया यह होनी चाहिए कि हम उसकी समस्या का समाध ान ढूँढ़ें कोशिश करें कि उसको अकेला नहीं छोड़ें? जो लोग आत्महत्या के बारे में सोचते हैं वो आत्महत्या करने से पहले एक ऐसे इंसान की तलाश में अवश्य रहते हैं जो उनका दर्द समझ सके उनकी बात सुन सके दुख दर्द साझा कर सके! अगर हमारे आसपास कोई ऐसा व्यक्ति जो बिलकुल अकेला रहना पसंद कर रहा हो नकारात्मक बातें करने लगा हो तो एक इंसान होने के नाते हमे उसकी भावनाओं को समझना है और जो बातें वह कर रहा है उसे उसकी दृष्टिकोण से भी दे खना और समझना है और यथासंभव प्रयास यही करना है कि वो अपनी आत्महत्या वाली मनरूस्थिति से बाहर निकल सके! जिंदगी अनमोल है और यह सिर्फ एक बार मिलती है यदि हम यह समझने और समझाने में सफल हो गए तो आत्महत्याओं में अंकुश अवश्य लगेगा!

आशीष तिवारी निर्मल
लालगांव जिला रीवा मध्यप्रदेश

दो जून की रोटी

लॉकडाउन में दो जून की रोटी की तलाश भी पूरी नहीं हो पा रही यह सोचता हुआ रामदयाल अपनी रिक्शा लेकर मंदिर वाले मार्केट के पास खड़ा था, तभी बूढे सुधाकर बाबू जो अपने घर जाने के लिए रिक्शे की तलाश में थे, आकर रिक्शे में बैठ गए।

कहाँ चलना है बाबूजी रिक्शे वाले कीआँ खें चमक उठी। सामने टेंपों स्टैंड के बाद वाली गली तक ले चलो सुधाकर बाबू ने व्यग्रता दिखाते हुए कहा।

रामदयाल को अपने बच्चों के चेहरे अपने नजरों के सामने घूमते दिखाई दे रहे थे, जिन्हें मुश्किल से दो जून की रोटी मिल पा रही थी।

वह सोच रहा था यदि एक दो सवारी और मिल जाए तो आज सबको पेटभर खाने को मिल जाएगा।

इधर सुधाकर बाबू भी सोच रहे थे बेचारे रिक्शावाले की हालत कितनी दयनीय है,बिना इसके स्वाभिमान को आहत पहुँचाते हुए कैसे मदद करूं।

तभी सुधाकर बाबू ने कहा–क्या तुम रेलवे कॉलोनी तक चलोगे।

रामदयाल ने कहा–बाबूजी उधर जाने में पौन घंटे लग जाते हैं,और सवारी भी नहीं मिलती ये पगडंडी पकड़ लीजिए पाँच मिनट में पहुँच जायेंगे।

सुधाकर बाबू ने पाँच सौ का नोट निकाल कर उसके हाथ में पकड़ा दिया और तेजी से आती एक टेंपो में बैठ गए।

लॉकडाउन में पतली गली में एक आध टैंपो दिख जाती थी।

रामदयाल ने पुकारते हुए कहा–बाबूजी छुट्टे नहीं हैं।

सुधाकर बाबू ने कहा रख लो मेरे पास भी नहीं है यह टैंपो छूट गयी तो परेश. ानी होगी। रामदयाल ने सोचा ईश्वर भी किस रूप में प्रकट होते हैं,उसने हाथ जोड़ लिए।

टेंपो आगे बढ चुकी थी सुधाकर बाबू को संतोष मिला, रिक्शेवाले को दो जून रोटी की रोटी मिल जाएगी।

रामदयाल के आखिरी शब्द उसके कानों तक पहुँची हे भोले बाबा....

निभा कुमारी
राजनगर, मधुबनी,
बिहार

जद(यू) कलमजीवी प्रकोष्ठ के प्रदेश महासचिव बने अनुराग समरूप

पटना। अनुराग समरूप को जनता दल यूनाईटेड जद (यू) कलमजीवी प्रकोष्ठ का प्रदेश महासचिव बनाया गया है।

जदयू कलमजीवी प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष डॉ श्री प्रभात चंद्रा ,पूर्व विध ान पार्षद डॉ श्री रणवीर नंदन ,जदयू के प्रदेश उपाध्यक्ष एवं पूर्व मंत्री श्री रणजीत सिन्हा की उपस्थिति में अनुराग समरूप को जदयू कलमजीवी प्रकोष्ट का प्रदेश महासचिव बनाया गया। इस अवसर पर मौजूद सभी लोगों ने अनुराग समरूप को बधाई एवं शुभकामना दी।

प्रदेश महासचिव ने बनने के बाद अनुराग समरूप ने कहा कि वह पार्टी के शीर्ष नेताओं का आभार व्क करते हैं कि उन्होंने उनपर भरोसा जताते हुये यह जिम्मेवारी सौंपी है। उन्होंने कहा कि जद(यू) ही ऐसी पार्टी है, जो सभी को साथ लेकर विकास करने के लिए कृत संकल्पित है!उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार विकास पुरुष हैं! वे सबका साथ सबका विकास करने के लिए कृतसंकल्पित हैं उन्होंने लोगों से पार्टी की नीति एवं सिद्धांतों से लोगों को अवगत कराते हुए पार्टी से जुड़ने के लिए आह्वान किया। उन्होंने कहा कि जिस तरह से पूर्व में मैंने पार्टी की सेवा की थी उसी तरह से आगे भी सेवा करता रहूंगा।

जान न पाया कोई भी, एकदम उठा लिया
ऐसे क्या हालात थे कि ये कदम उठा लिया
अपनी माटी, अपना देश सूना कर गए हो तुम
होता है यकीन नहीं कि, गुजर गए हो तुम
सुनके खबर आहत ये, दिल हमारा हो गया
फिल्मी नभ से एक चमकता सितारा खो गया
ये तो समाधान न था , क्यों वहम उठा लिया
ऐसे क्या हालात थे कि ये कदम उठा लिया

और भी कदम यहां थे मुश्किलों के वास्ते
अवसाद से निकलने के और कई थे रास्ते
और किसी रास्ते को क्यों चुना तुमने नहीं
देश की धड़कन में तुम थे क्यों सुना तुमने नहीं
ईश्वर भी आज हो गया था, बेरहम उठा लिया
ऐसे क्या हालात थे कि ये कदम उठा लिया

ऐसा लग रहा है कि, विपन्न हो गए सभी
दुख में सारे डूब गए, सन्न हो गए सभी
रो रही धरा यहां है, रो रहा गगन यहां
आंसूओं से देश देता श्रद्धा के सुमन यहां
तुमको न भूलेंगे कभी ये कसम उठा लिया
ऐसे क्या हालात थे कि ये कदम उठा लिया

विक्रम कुमार
मनोरा, वैशाली

रक्तदान है महादान

रक्तदान से बढ़कर नहीं
दूजा और कोई दान
रक्तदान है महादान.....
मरते इंसान में डालो जान
स्वार्थ को त्याग
इंसानियत को दो मान
रक्तदान है महादान.....
डब्लूएचओ का है अभियान
जागरूक बने हर इंसान
रक्तदान है महादान.....
रक्त को शुद्ध करता रक्तदान
जीवन को नवप्रभात दिखाता ज्ञान
रक्तदान है महादान.....
जरूरतमंद के लिए बनो वरदान
मानवता की बनो पहचान
रक्तदान है महादान.....
इंसान जब बचाए इंसान की जान
जिन्दादिली को
मिलता सदा सम्मान
रक्तदान है महादान.....
नर सेवा नारायण सेवा
निभाएं अपना कर्तव्य महान
रक्तदान है महादान.....
नर को दो नव जीवनदान
समाज को दो अपना योगदान
रक्तदान है महादान.....

अतुल पाठक, हाथरस

भौतिकता हो गई है हावी
रिश्तों की मर्यादा पर
हर रिश्ता सिकुड़ गया
और जलकर राख हुआ स्वार्थ की भट्टी में...
रिश्तों की कीमत
दौलत की तराजू पर आकी जाने लगी है
चेहरा देखकर
आदमी की औकात बताई जाने लगी है

रिश्तों की कीमत

पद–पहुँच के हिसाब से
सम्मान के रंग में निखार आने लगा है
ऐ आदमी ! कब तक कोरा दिखावा दिखायेगा
सिर्फ दो गज कफन का टुकड़ा ही तो तेरे
काम आयेगा द्य
मत तोल धन के तराजू पर रिश्तों को
क्या –क्या कर्त्तव्य हैं तेरे उनको पूरा कर
दिखावा, आडम्बर के जाल में मत फस
इंसान हो तो इंसानियत को मत भूलो
जो तुझको भुलाये
तू उनको नजरअंदाज कर
कर्म कर नित और समय का इंतजार कर
भूलकर भी स्वयं को खत्म मत कर
स्वंय से लड़कर
समय को मात दे
कभी–कभी भूलकर अपनों को
तू अकेला ही जीवन जी...

– मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

गरीब की हकीकत

भूखा प्यासा वह जो फिरता है
अंततः देखो नींद में गिर पड़ता है
सो जाता है टूटी खाट पर
शरीर नहीं जिसकी बची पाव भर
लिपटी हुई काया पूरी एक धोती में
पेट कैसे भर जाए सिर्फ सूखी रोटी में
बीमारी के साथ भुखमरी के हालात हैं
सबसे पूछ कर देखा कोई न जवाब है
कब मिलेगा काम नया कब नया दिन होगा
कब तक रोज उम्मीदों का चादर सिलना होगा
कब तक ये भुखमरी यूँ ही सतायेगी
बढ़ी ढीठ है जिन्दगी मौत नहीं आयेगी
सोचते सोचते यूँ ही वह सो जाता है
बीमारी लगे न लगे भूख से गरीब मर जाता है

शुभम पांडेय गगन, अयोध्या, फैजाबाद

■ संभाल रखा है मैंने ■

क्तरा–कतरा मुलाकातों का संभाल रखा है मैंने,
टिकट उसके शहर का बटुए में संभाल रखा है मैने।।
सुबह को शाम की है हर रोज जो उसे पढ़ते पढ़ते,
उसका हर खत किताबो के बीच संभाल रखा है मैंने।
दिन की रोशनी में भी जुगनुओं को पकड़ने चला हूँ,
बगैर दिल ,धड़कनों को हाथो में संभाल रखा है मैंने।।
बेरहम धूप तले जारी है सफर मिलों का कही,
बून्द–बून्द से गले को अपने तर रखा है मैंने।।
मरहम लगा जाए जुल्फों भरी छाव हाथो से अपने,
इसी ख्वाहिश में झुलसता बदन संभाल रखा है मैने।।
हो रहा अँधेरा कई ठोकरो को सहना पड़ेगा अब,
आँखो में महकती आरजू को संभाल रखा है मैने।।
निकल पड़ता हूँ कदम दो कदम टहलने साथ उसके,
बड़ी खूबसूरती से जहन में उसे संभाल रखा है मैंने।।
बगैर उस किदार के कहाँ कोई दासतां मेरी,
हर गीत गजलों में जो उसे संभाल रखा है मैंने।।

अमन न्याती
शंभूपुरा ,
चित्तौड़गढ़ (राज.)

अंग्रेज अधिकारी भी नतमस्तक हुआ कमरुनाग की अदृश्य शक्ति के आगे

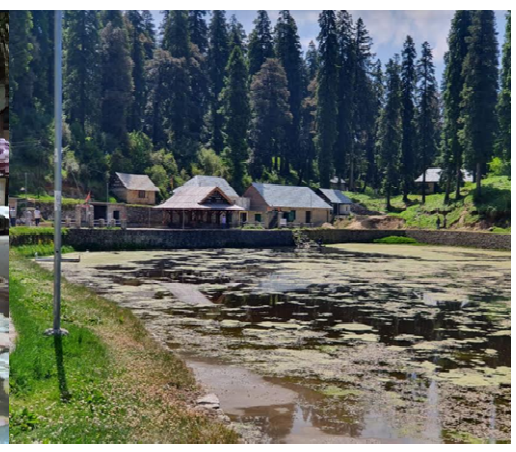

कमरूनाग द्वापर युगीन देवता हैं। पांडवों के ठाकुर के रुप में पूज्य कमरुदेव जी मंडी जनपद के अराध्य देव हैं।मंडी और सुकेत रियासत के सबसे बड़े तीर्थ सराना. हुली को प्राचीनता की सीमा मे नहीं बांधा जा सकता।2006 से 2015 के मध्य तत्कालीन कमरुदेव कमेटी के कटवाल निर्मल ठाकुर के नेतृत्व में कमरुदेव परिसर का यादगार विकास हुआ।

चौलचौक–मटोगलु–जवाल–झौर–खुंडा तथा चौलचौक–कुक्कड़ीगलु–बांदली– सरोआ– सजीहणी–सकरैणी–कलहणी–झोर–खुंडा होकर खुंडा से आगे कमरुदेव तक पैदल चलने योग्य पांच फुट चौड़े रास्ते के साथ रोहांडा और चौकी की ओर से भी कमरुदेव ष्ओडेष सेलगभग एक किलोमीटर इसी तरह के रास्ते प्राकृतिक आनंद को अत्याधिक आरामदेह बना देते हैं।कमरुदेव झील के चारों ओर के तट की विशाल दीवार मंदिर परिसर को चार चांद लगा देती है।प्रकृति के इस सुरम्य स्थल पर श्रद्धालुओं के रात्रि निवास के लिए पर्यावरण के अनुकूल सरायों के निर्माण व कमरुदेव जी के साधारण सा दिखने वाले भवन की पुरातात्विक शैली में निर्माण इस तीर्थ की ऐतिहासिकता को बल प्रदान करता है।पर्यटन की दृष्टि से बहुत ही आकर्षक और महत्वपूर्ण सरानाहुली झीलध्सौर के पूर्वी तट पर विराजमान श्री कमरुदेव जी के देओरे में प्रतिष्ठापित कमरुदेव जी का साधारण सा श्रीविग्रह आज दर्शनीय होने के साथ विश्व प्रसिद्ध है।वसुदैव कुटुम्बकम का आदर्श स्थल बने इस तीर्थ पर हिन्दू ही नहीं सिख ,मुस्लिम और इसाई भी अपने जीवन की समस्याओं के समाधान के साथ मानसिक शांति प्राप्त करते हैं।यूं तो वर्ष पर्यन्त तक हर संक्रांति को लोग कमरुनाग आकर श्रद्धासुमन चढ़ाते ही हैं परंतु आषाढ़ की संक्रांति को इस स्थान पर लगने वाले सरानाहुली मेले में 40–50 हजार श्रद्धालु अद्वितीय सौंदर्य से परिपूर्ण इस स्थल पर पहुंचकर अपनी मन्नौतियां कमरुदेव के श्री विग्रह के आगे अर्पित करने के बाद झील में नाग रुप में विराजमान कमरुनाग जी को भी सोने–चांदी के आभूषण और नकदी ष्तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेराष के भाव से अर्पित कर स्वयं को धन्य मानते हैं। अरबों रुपये की धन संपदा इस झील के गर्भ में संचित हुई है।संस्कृति मर्मज्ञ डॉक्टर जगदीश शर्मा और कमरुदेव कमेटी के पूर्व कटवाल निर्मल सिंह ठाकुर का कहना है जिस प्रकार अरबों रुपये की धन–संपति कमरुनाग झील में अर्पित की जाती है,इसे देखकर 1911 में अंग्रेज अधिकारी गावर्ट ने इस विशिष्ट परंपरा को अनुचित मानकर उसने झील का पानी निकालने का निर्देश दिया तथा झील में मन्नौतियों के संकल्प के रुप में समर्पित सोने–चांदी के आभूषण और नकदी रुपये निकाल कर सरकारी कोष में जमा करवाने के निर्देश दिए।कहते हैं कि कमरुदेव के पुजारियों, कारदारों ने अंग्रेज अधिकारी को ऐसा करने से रोका।लेकिन अंग्रेज अधिकारी ने लोगों की इस धार्मिक मान्यता को अंध ाविश्वास कहकर अपनी आज्ञा को व्यवहारिकता प्रदान करने पर तुल गया।जैसे ही गावर्ट के निर्देशानुसार कमरुनाग झील में दबी धन–संपदा को निकालने का कार्य शुरू हुआ,अंग्रेज अधिकारी बीमार हो गया।बाद में अंग्रेज अधिकारी गावर्ट ने लोगों की बात मान ली तथा झील में छिपी हुई धन–संपदा को निकलवाने का कार्य बंद करवा दिया।सुख और कल्याण की भावना से से निहित परमानंद की अनुभूति प्राप्त कर गावर्ट कमरुदेव जी के आगे नतमस्तक होकर क्षमा याचना मांगने के बाद ब्रिटिश सेवा से त्यागपत्र देकर इंग्लैंड चला गया।

कमरुदेव जी के ऐसे अनेकों चमत्कारों को शब्दों में नहीं बांधा जा सकता।

यह चमत्कार आज भी यहां आने वाले हर श्रद्धालु के साथ उतने ही जुडे हैं जितने प्राचीन काल में।इस वर्ष कोरोना के विश्वव्यापीअनियंत्रित संक्रमण के करण कमरुनाग जी का वार्षिक उत्सव नहीं हुआ।आषाढ़ संक्रांति व ष्बकरयाला साजेष के पावन अवसर पर श्रद्ध ालुओं ने अपने घरों में ही पूजा स्थल में कमरुदेव जी की प्रतिमा के आगे एक ष्परातश में पानी भरकर सरानाहुली झील बनाकर इसमें पठावा(देवदार के परागकण) पुष्प, सिक्के अर्पित कर आटे से बनाए बकरे की बलि देकर विधिवत कमरुदेव जी पूजा अर्चना कर शुभ आशीर्वाद प्राप्त कर स्वयं को धन्य किया तथा कोरोना संग्रमण से विश्व मुक्ति की प्रार्थना की।

डॉ जगदीश शर्मा
पांगणा करसोग
मण्डी हिमाचल प्रदेश

घूँघट की बगावत

गोरखपुर, रविवार, 21 जून 2020

www.ghoonghatkibagawat.com

8

पानी से सस्ता तेल, भारत में दरें आसमान पर

लॉकडाउन की वजह से दुनियाभर में लोग घरों में है। तेल की मांग में कमी की यह भी एक बड़ी वजह है। दुनिया के पास फिलहाल इस्तेमाल की जरूरत से ज्यादा कच्चा तेल है और आर्थिक गिरावट की वजह से दुनियाभर में तेल की मांग में कमी आई है। तेल के सबसे बड़े निर्यातक ओपेक और इसके सहयोगी जैसे रूस, पहले ही तेल के उत्पादन में रिकॉर्ड कमी लाने पर राजी हो चुके है। अमरीका और बाकी देशों में भी तेल उत्पादन में कमी लाने का फैसला लिया गया है। लेकिन तेल उत्पादन में कमी लाने के बावजूद दुनिया के पास इस्तेमाल की जरूरत से अधिक कच्चा तेल उपलब्ध है। समंदर और धरती पर भी स्टोरेज तेजी से भर रहे हैं।

स्टोरोज की कमी भी एक समस्या बन रही है। साथ ही कोरोना महामारी से बाहर आने के बाद भी दुनिया में तेल की मांग धीरे–धीरे बढ़ेगी और हालात सामान्य होने में लंबा वक्त लगेगा। क्योंकि यह सब कुछ स्वास्थ्य संकट के निपटने पर निर्भर करता है।

कच्चे तेल की कीमतें कोरोना वायरस महामारी और रूस तथा सऊदी अरब के बीच जारी कीमत युद्ध के कारण काफी टूट चुकी हैं। लेकिन भारत में तेल की कीमतों में गिरावट के बाद भी उपभोक्ताओं को लाभ नहीं मिलता है, तेल और गैस क्षेत्र भारत के आठ प्रमुख उद्योगों में से एक है और अर्थव्यवस्था के अन्य सभी महत्वपूर्ण वर्गों के लिए निर्णय लेने को प्रभावित करने में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। इसलिए, तेल और गैस के दाम अधिक बढ़ने का अनुमान है। सरकार ने इस क्षेत्र के कई क्षेत्रों में 100 प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति दी है, जिसमें प्राकृतिक गैस, पेट्रोलियम उत्पाद और रिफाइनरियाँ शामिल हैं।

कच्चा तेल बोतलबंद पानी से भी सस्ता–

भारत में पेट्रोल और डीजल की खुदरा कीमतें वैश्विक कच्चे तेल की कीमतों से जुड़ी हैं। जिसका मतलब है कि अगर कच्चे तेल की कीमतें गिरती हैं, जैसा कि फरवरी से काफी हद तक चलन रहा है, तो खुदरा कीमतों में भी कमी आनी चाहिए, लेकिन हुआ ठीक इसके विपरीत। तेल कंपनियों ने 82 दिनों के अंतराल के बाद बीते रविवार से संशोधित कीमतों को फिर से शुरू करने के बाद से ऑटो ईंधन की कीमतों में बढ़ोतरी की। पिछले छह दिनों में पेट्रोल की कीमत में 3.31 रुपये प्रति लीटर और डीजल में 3.42 रुपये की बढ़ोतरी हुई है।

बीते माह न्यूयॉर्क ऑयल मार्केट में तेल की कीमतें इतनी गिरी की कच्चा तेल बोतलबंद पानी से भी सस्ता हो गया।

सवाल उठता है कि दुनियाभर में बाजार में कच्चे तेल की कीमत पानी से भी कम हो गई है तो हमें पेट्रोल–डीजल इतना महंगा क्यों मिल रहा है? भारत में पेट्रोलियम पदार्थों की मांग भले ही तेजी से बढ़ी हों, लेकिन उत्पादन पर्याप्त नहीं है। ऐसे में हमें अपनी जरूरत का करीब 85 फीसदी कच्चा तेल आयात करना पड़ता है। जाहिर है कि यदि विदेशी बाजार में यह महंगा होता तो घरेलू बाजार में पेट्रोलकृडीजल महंगा होगा और कच्चा तेल सस्ता होगा तो पेट्रोलियम उत्पाद सस्ता होता है तो यह सस्ता होगा। लेकिन अभी ऐसा दिख नहीं रहा है भारत में तेल की कीमत में गिरावट एक तरह से अजीब है – जब वैश्विक कीमतें बढ़ती हैं, तो यह उपभोक्ता को भरना पड़ता है, जिसे खपत किए गए प्रत्येक लीटर ईंधन के लिए अधिक पैसा देना पड़ता है। लेकिन जब रिवर्स होता है और कीमतें नीचे जाती हैं, तो सरकार यह सुनिश्चित करते हुए कि यह अतिरिक्त राजस्व में है, तो अपने पास रख लेती है और उपभोगताओं को कोई छूट नहीं देती।

कच्चे तेल का सस्ता होना, तेल सस्ता होना नहीं–

कच्चे तेल की कीमतों में भारी गिरावट के बावजूद उपभोक्ताओं को लाभ नहीं मिलते। फरवरी की शुरुआत में क्रूड की कीमतें औसतन + 55 प्रति बैरल से घटकर + 35 तक पहुंच गईं, और फिर मार्च के अंत तक गिरकर 20 डॉलर तक पहुंच गई, क्योंकि मांग में गिरावट थी। उस समय से, कीमतें अब लगभग + 37 तक वापस आ गई हैं। दूसरी ओर, भारत में, ईंधन की खुदरा कीमतें 82 दिनों के रिकॉर्ड के लिए जमी हुई है, यहां तक कि ईंधन पर उत्पाद शुल्क में केंद्र द्वारा दो बार बढ़ोतरी की गई। हालांकि सरकार ने दावा किया कि बढ़ोतरी का असर उपभोक्ताओं पर नहीं पड़ा है, लेकिन बाद में कच्चे तेल की कीमतों में इस गिरावट का फायदा निम्न स्तर पर पहुंचने में नहीं हुआ। केंद्र के अलावा, कई राज्यों ने इस अवधि के दौरान ऑटो ईंधन पर लगान भी बढ़ाया।

वित्त मंत्रालय के अधिकारियों ने कहा है कि तेल कीमतों को बढ़ाने का निर्णय तंग राजकोषीय स्थिति को देखते हुए लिया गया है और खुदरा कीमतों में उत्तरोत्तर वृद्धि की जा रही है।

कच्चे तेल की कीमतें माइनस में जाने का यह मतलब नहीं है कि आज या कल से ही तेल सस्ता हो गया है। दरअसल मई महीने में कच्चे तेल की सप्लाई के लिए जो ठेके दिए जाते हैं वो अब निगेटिव में चला गया है। तेल विक्रेता दुनिया के देशों से तेल खरीदने के लिए कह रहे हैं लेकिन तेल खर्च करने वाले देशों को इसकी जरूरत नहीं है, क्योंकि उनकी अरबों की आबादी घरों में बैठी है लिहाजा वे तेल नहीं खरीद रहे हैं। उनका तेल भंडार भरा हुआ है, पुराना तेल खर्च न होने से उनके पास नया तेल स्टोर करने के लिए जगह नहीं है।

भारत आयात के जरिए पूरी करता है मांग–

भारत कच्चे तेल का बड़ा आयातक है। खपत का 85 फीसदी हिस्सा भारत आयात के जरिए पूरा करता है। इसलिए जब भी क्रूड सस्ता होता है, तो भारत को इसका फायदा होता है। तेल सस्ता होने की स्थिति में आयात में कमी नहीं पड़ती लेकिन भारत का बैलेंस ऑफ ट्रेड कम होता है। इससे रुपए को फायदा होता है क्योंकि डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपए में मजबूती आती है, जिससे महंगाई भी काबू में आ जाती है। सस्ते कच्चे तेल से घरेलू बाजार में भी इसकी कीमतें कम रहेंगी।

भारत की निर्भरता ब्रेंट क्रूड की सप्लाई पर है, न कि डब्लूटीआई (टेक्सास इंटरमीडिएट) की। ब्रेंट का दाम अब भी 20 डॉलर के ऊपर बना हुआ है। गिरावट सिर्फ डब्लूटीआई के मई में दिखाई दी, जून अब भी 20 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर है। लिहाजा भारत पर अमेरिकी क्रूड के नेगेटिव होने का खास असर नहीं होगा। जब भी कच्चे तेल के भाव में जब एक डॉलर की कमी आती है तो भारत के आयात बिल में करीब 29000 करोड़ डॉलर की कमी आती है। यानी 10 डॉलर की कमी आने से 2 लाख 90 हजार डॉलर की बचत। सरकार को इतनी बचत होगी तो जाहिर है पेट्रोल–डीजल और अन्य फ्यूल के दाम पर असर पड़ेगा।

गिरी कीमतों का फायदा सरकार और तेल कंपनियों को–

मतलब साफ है दाम घटने के सारे फायदे सरकार और तेल कंपनियों के खाते में जा रहे हैं, जनता को नहीं दिए जा रहे। जब कच्चा तेल महंगा होता है तो दाम तुरंत बढ़ जाते हैं।

अब जब सस्ता हो रहा है तो दाम और घटने भी चाहिए। अर्थशास्त्री भी मानते हैं कि इस गिरावट का कुछ फायदा आम लोगों तक भी पहुंचना चाहिए। कच्चा तेल सस्ता होने का कुछ फायदा आम आदमी को भी मिलना चाहिए। साथ ही, सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि जो अतिरिक्त कमाई तेल पर कर से हो रही है उसका इस्तेमाल बुनियादी सेक्टर में नए निवेश और नरेगा जैसी सामाजिक विकास की योजनाओं पर हो।

डॉ. सत्यवान सौरभ,

कोरोना वायरस से हम नहीं होते परेशान

कोरोनावायरस के चलते मार्च महीने में सभी कुछ बंद कर देने का फैसला लेते हुए, सरकार ने सम्पूर्ण लॉक डाउन लगाने का फैसला लिया था। जिसे धीरे–धीरे कर अब खोला जा रहा है। अन लॉक वन में बाजारों–दुकानो सहित, धार्मिक स्थलों को खोलने का फैसला लिया गया। अब मॉल–रेस्टोरेंट भी खुल रहें है। ताकि लोगों द्वारा लॉक डाउन में मानसिक रूप से परेशान हो कर घरों में बंद रहते हुए सहन कर रहें तनाव में कुछ कमी लाई जा सकें। साथ ही साथ केन्द्र और राज्यो के खजाने में भी कुछ खनक सुनाई दे जो कोरोना काल की भेंट चढ़ गया है। किन्तु सरकार के बाजार–मॉल इत्यादि खोल देने के बाद भी लोग अपने घरों से बाहर नहीं आ रहें हैं। सरकार द्वारा जा रही विपदा के समय छूट का हमारे देश के लोगों द्वारा कोई लाभ उठाने की कोशिश नहीं की जा रही है। वह अपने घ रों में ही बंद है। इन गर्मी के दिनों में भी मॉल में लगें एसी का मजा लेने की लोगों में कोई ख्वाहिश नहीं दिख रही है। लोग गर्मी के मौसम में भी ठंडे पड़े हैं। हमारे देश के लोगों को मानों अब कोरोन. ावायरस से बचने के लिए सरकार और डॉक्टरों पर कुछ ज्यादा यकीन नहीं है।

शादियों का बाजार भी इस समय ना के बराबर हो रहा है। फिर भी फैशन इस तरह लोगो को प्रभावित करता है कि आज के समय में दुल्हन और दूल्हे के लिए उनके कपड़ों से मेचिंग मास्क भी बाजारों में उपलब्ध हैं। साथ ही साथ ऑनलाइन शादी करवाने का पैकेज भी आ चुका है। लोगों को कपड़े खरीदना, इलाज करवाना, अन्य कोई छोटे मोटे कामों से तो कोरोनावायरस ने रोक लिया, लेकिन शादी करने से नहीं रोक पाया। जन्मों–जन्मों का संबंध जोड़ने वाले सात फेरों की ताकत इतनी अधिक है कि चाइना का वायरस भी उसके सामने हार मान चूका है। लॉक डाउन में हुई शादी में यदि किसी दुल्हन के पॉजिटिव होने पर, उसके पति समेत शादी में सम्मिलित हुए सभी रिश्तेदारों को क्वॉरेंटाइन करना पड़ता है। तब देश में नियमों का सही से पालन ना करने की खबर भी सामने आ जाती है। किन्तु इसमें परेशान होने या दु खी होने की बात नहीं है। विवाह बंधन सब से अधिक महत्वपूर्ण है। इसके लिए सभी नियमों का उल्लघंन भी किया जा सकता है ओर अपनी और अपनों की जान को दाब पर लगाया जा सकता है। विवाह करना नेक कार्य है। उसके लिए आपदा काल में भी रूकने और विचार करने की आवश्यकता नहीं है। यदि लोग भूख से परेशान हैं। तो हम को चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। शादी के लिए लाखों का बजट रखा है। उसका इस्तेमाल अभी नहीं हुआ कोई बात नहीं हम बाद में सभी को पार्टी दे कर इस्तेमाल करेंगे। लेकिन एक भी रूपया आस–पास किसी परेशान व्यक्ति को नहीं देंगे। शराब और विवाह के लिए पैसे देंगे, लेकिन कभी भी किसी पैदल जातें व्यक्ति के बारे में सोच उसके कदमों को राहत नहीं देंगे। आपदा का समय है फिर भी हम राजनीति करेंगे। राजनेता नहीं हुए तो क्या हुआ। धर्म के नाम पर खुद को बांट खुद को बरबादी की राह पर ले जा कर अपनों का भविष्य खोखला करना हमें आता है। दुनिया या देश पर कोई भी परेशानियां आएं। हमें फर्क नहीं पड़ता है। परेशान लोगों के आंसू पोंछने का प्रयास करने कि जगह हम सोशल मीडिया पर लोगों को दिखाने के लिए मददगार बन तस्वीरें साझा करेंगे। कोरोना वायरस का प्रमाणपत्र सांझा कर प्रसन्नता हासिल कर खुश हो जाएंगे। किसी मजबूर के दर्द और दुःख को बिना समझे। कोरोनावायरस ने हमारे चेहरों पर लगे मुखौटे हटा दिए हैं और यह असली चेहरे इतने अधिक निंदनीय है कि हम खुद से ही आंख नहीं मिला सकते हैं। इसलिए मास्क लगाकर खुद से खुद को बचा रहे हैं। अब हमारी और हमारी सरकारों की हकीकत के साथ ही साथ आज हमारी स्वास्थ्य सुविधाओं की भी हकीकत सामने आ गई है। अब भी यदि हम नहीं सुधरे तो हमें कोई नहीं बचा सकता है।

राखी सरोज

बेंगलुरू स्थित शंकर मठ में आयोजित धनवन्तरि यज्ञ में प्रतिभाग करते कर्नाटक के मुख्यमंत्री बी.एस.येड्डियुरप्पा व अन्य

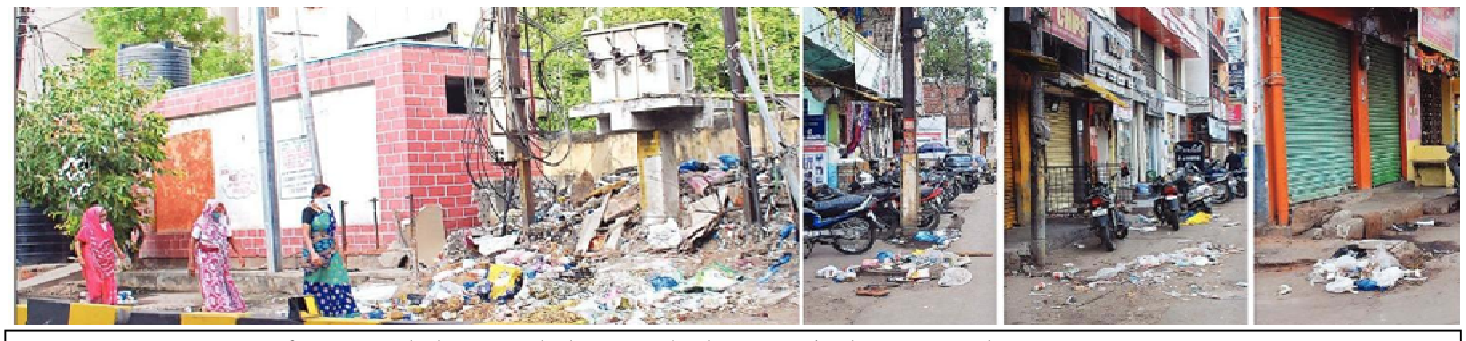

सफाई व्यवस्था को ठेंगा दिखाते हैदराबाद के गोशमहल और बेगम बाजार के दरम्यान यह छायाचित्र

झमाझम बारिश के बाद पटना राजधानी की सड़कों पर हुआ जलजमाव

सोशल मीडिया पर दीपिका पादुकोण और रणवीर सिंह की प्रेम कहानी से अब लोगों का मोह भंग होता नजहर आ रहा है क्योंकि तालाबंदी के दौरान, दंपति घर में एक साथ उत्पादक का काम कर रहे हैं और रणवीर सोशल मीडिया पर अपनी पत्नी के खाना पकाने के कौशल को दिखा रहे हैं। इस जोड़ी ने हमेशा अपनी सिजलिंग केमिस्ट्री के साथ ऑन–स्क्रीन ध्यान आकर्षित किया है। जितना हम उन्हें सिल्वर स्क्रीन पर एक साथ देखने का आनंद लेते हैं, उनका ओह–अचूक रिश्ता सहस्त्राब्दि वास्तविक रिश्ते लक्ष्यों को प्रदान करता है। लगभग छह साल तक डेटिंग करने के बाद, रणवीर और दीपिका को 14 नवंबर, 2018 को एक पारंपरिक कोंकणी शादी में रोका गया, जिसके बाद अगले दिन आनंद कारज किया गया। वर्ष 2012 में पहली बार दोनों और रणवीर ने कई साक्षात्कारों में खुलासा किया कि कैसे वह पहली ही मुलाकात में दोनों एक दूसरे को देखते ही चारोखाने चित्त हो गए। विदित हो कि यह जोड़ी एक ही वर्ष में अपनी पहली फिल्म के लिए परवान चढ़ी थी, जो संजय लीला भंसाली की ब्लॉकबस्टर फिल्म गोलियां की रासलीला, राम लीला थी। उनके रिश्ते की अफवाहों ने जल्द ही गपशप मिलों के लिए अपना रास्ता बना लिया। दरअसल, फिल्म में रणवीर–दीपिका की सिजलिंग केमिस्ट्री ने खबरों में और इजाफा कर दिया। साल 2018 दोनों अभिनेताओं के पेशेवर के साथ–साथ निजी जीवन में भी एक महत्वपूर्ण मोड़ था, क्योंकि उनकी फिल्म पद्मावत काफी हिट रही थी और आखिरकार वे कुछ दोस्तों और परिवार के सदस्यों की उपस्थिति में इटली में शादी के बंधन में बंध गए।

स्वामी, मुद्रक प्रकाशक पंकज धर द्विवेदी द्वारा जनप्रकाशन प्रेस रीडसाहब का धर्मशाला से मुद्रित एवं 45 बादशाहबाग जगन्नाथपुर से प्रकाशित।

सम्पादक : पंकज धर द्विवेदी

ई–मेल – ghoonghatkibagawat@gmail.com

वैधानिक चेतावनी :

यद्यपि इस अंक में प्रकाशित समाचारों/अग्रलेखों कविताओं आदि का संकलन करते हुए इस बात का पूरा ख्याल रखा गया है कि वे पठनीय, सुस्पष्ट, सुग्राह्य, हों। द्वितीयतः उनके प्रस्तुतिकरण को भाषीय, व्याकरणीय, आदि दृष्टियों से भी त्रुटिहीन रखने का पूरा प्रयास किया गया है। बावजूद इसके प्रूफिंग, संकलन, संपादन, मुद्रण एवं प्रकाशन में किसी प्रकार की कोई त्रुटि आपके दृष्टिपथ में उभरकर आती है, आशा है सुधी पाठकगण, क्षमा करते हुए उसे रेखांकित कर हमारे सम्पादकीय विभाग, (45, बादशाहबाग, जगन्नाथपुर, गोरखपुर) अथवा समाचार पत्र के ई–मेल पर प्रेषित करेंगे जिससे उन त्रुटियों की पुनरावृत्ति न हो।

इसके अतिरिक्त हमारे विद्वतजन जो सम्पादकीय विभाग में सेवारत हैं, वे सामग्री की मांग के अनुसार आवश्यक फेरबदल करते रहते हैं। ऐसे में आपका यह भी दायित्व होता है कि विभागीय सहयोगियों के दायित्वों का स्मरण भी यथा–समय दिलाते रहना पाठकों की जागरूकता का द्योतक है। आपकी जागरूकता हमारा संबल है।

- त्रुटियों को मानवीय स्वभाव के अन्तर्गत माना जाता है। इसके लिए स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अथवा सम्पादक जिम्मेदार नहीं होंगे। इस अंक में प्रकाशित समाचारों के लिए उत्तरदायी सूचना प्रदाता होंगे।
- प्रत्येक विवाद का निस्तारण स्थल न्यायालय गोरखपुर होगा।